॥ ॐ ॥

चैत्यवन्दन-सामायिक

हिन्दी भाषान्तर, श्रावकके षट्
कर्त्तव्य और विधि सहित।

जिसको

श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी साहब घीया
ने स्तवन, सज्झाय आदि उपयोगी
विषयोंके साथ सम्पादन करके

श्रीयुत सेठ शङ्करलालजी साहब घीयाकी स्वर्गस्थ
सुपुत्री मानकुँअरबाईके स्मरणार्थ
'जैनविजय' प्रेस सूरतमें छपवाकर.
प्रकाशित करवाई।

मूल्य

बांचन, मनन और यथाविधि वर्त्तन।

वीर सम्वत २४४५ वीक्रम सं० १९७५।

प्रकाशकः—
श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी घीया
प्रतापगढ़ (मालवा)

मुद्रकः—
ईश्वरलाल किसनदास कापड़िया
'जैनविजय' प्रिन्टिंग प्रेस खपाटिया चकला
लक्ष्मीनारायणकी वाड़ी—सूरत.

॥ श्री ॥

प्रस्तावना।
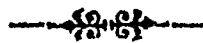
यह बड़े हर्षकी बात है कि हमारे समाजमें अब इस ओर विशेष रूपसे ध्यान दिया जाने लगा है कि वर्त्तमान समयकी प्रचलित भाषामें धार्मिक ग्रंथोंका अनुवाद किया जाकर प्रकट करनेमे विशेष लाभ हो सकता है। इस कार्यके लिए कई एक उत्तम२ संस्थाएं भी स्थापित हो चुकी हैं।

उपरोक्त हेतुसे यह छोटीसी पुस्तक "चैत्यवन्दन सामायिक" तथा श्रावक कर्त्तव्य हिन्दी भाषान्तरमें मूल पाठोंके साथ प्रकाशित की जाती है। इस पुस्तकसे प्रत्येक श्रावक श्राविकाको विशेष रूपसे प्रतिदिन धार्मिक कार्योंमें सहायता मिल सके इस विचारसे व्रत पच्चक्खानके साथ२ उत्तम—उत्तम स्तवन, सज्झायादिका भी संग्रह किया गया है।

आशा है कि यह पुस्तक सुज्ञ महाशयोंको रुचिकर एवम् उपयोगी हो सकेगी।

सम्पादक—

॥ श्री ॥

परलोकगामिनी मानकुंअरबाई.

स्वप्नमें भी हमको यह सन्देह नहीं था कि इस अल्प आयुष्यवाली बालिका, जिसको थोड़े समय पहले ही हम श्री सम्मेदशिखरादि पञ्चतीर्थोंकी यात्रामें साथ लेकर फिरते थे, अपनी ही लेखनी द्वारा शोक संतप्त हृदयसे उसके विषयमें कुछ लिखना पड़ेगा! कालकी विचित्र गति है, किसीका वश नहीं।

गृहस्थो! आप जिस बालिकाका फोटो देख रहे हैं, उसने एक सुधर्मप्रेमी, विख्यात कुटुम्बमें मगसर वदी १० मंगलवार सम्वत् १९६६ को जन्म लिया था और अपनी आठ वर्षकी बाल्यावस्थाका एक उम्दा चरित्र बतलाकर सम्वत् १९७३ फागन सुदी १३ की रात्रिको परलोकगमन कर गई।

जैन समाजमें श्रीमान् सेठ भगवानदासजी घीयाके सुपुत्रोंकी विख्याति कुछ कम नहीं है, सेठ लक्ष्मीचन्दजी साहब घीया समाजकी जो सेवा कर रहे हैं वह भी जैन समुदायसे अपरिचित नहीं है। यह बालिका उन्हींके लघु भ्राता सेठ शङ्करलालजी घीया की पुत्री थी।

इस बालिकाकी छोटी उम्र होते हुए भी विद्यारुचि इतनी अधिक थी कि धार्मिक और व्यावहारिक अभ्यास आग्रहपूर्वक करती रहती थी। परस्पर वादविवाद, क्लेश करना नहीं

यह बालिका देवपूजाके लिए शुद्ध वस्त्र अलग रखवाकर अपने पिता या माता (हगामबाई)के साथ जिनराज पूजा बहुत रुचिके साथ किया करती थी। अपनी पाठशालाकी अन्य बालि-काओंके साथ प्रभुकी स्तुति भी ऐसी आनंदपूर्वक करती थी कि सुननेवाले बड़े खुश होते थे।

श्रीमती गुरणीजी साहबा पुण्यश्रीजी आदि साध्वियां जब प्रतापगढ़ पधारीं तब यह बालिका ३–४ वर्षकी होगी। उस समय यह उनके पास हठ करके बैठ रहती और कोई कहता कि ये गुरणीजी तो मेरे हैं तब यह कहती कि मेरे हैं तुम्हारे नहीं। जब इसको कोई पूछता कि तू विवाह करेगी या दिक्षा लेगी तो यह उत्तर देती कि "दिक्षा लूंगी"।

इस बालिकाको परोपकार इतना प्रिय था कि किसी अनाथ या दीन दुःखीको खाने पीनेकी ची याज पैसा चुपकेसे दे देती।

गुणग्राही भी इतनी थी कि अपने घरमें विवाहोत्सवके समय अपने अध्यापकको पहले पघड़ी भिजवाई तब भोजन किया।

थोड़े ही समय बाद सेठ शङ्करलालजी सपत्नि बम्बई दुकान पर जानेके लिए जब यहांसे रवाना हुए तो जावरे स्टेशनसे ६ माईल दूर रिंगनोद नामक ग्राममें जो श्रीनेमीप्रभु प्रमुख ९ मूर्त्तियां भूतलसे प्रकट हुईं उनके दर्शनार्थ गये। यहीं इस बालिकाको चेचककी बीमारी लागू हो गई, वापस प्रतापगढ़ आए और उपचार भी किये पर सब निष्फल हुए। यह रोगग्रस्त बालिका केवल भगवानका नाम लिया करती थी और कहती थी की मरजाऊंगी।

श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्दजीने इसकी अवस्था देखकर इसको आलो-याना व्रत पच्चक्खान कराए, दानपुण्य कहा और अन्तसमय तक नवकार मंत्रको सुनाते रहे ।

सज्जनो ! इस बालिकाकी आकृति व चिन्ह देखकर हरेककी तबियत खुश होजाती थी; पर कालके सामने किसीका वश नहीं।

अन्तमें हम यही चाहते हैं कि इस बालिकाकी आत्माको शान्ति मिले और प्रत्येक जन्ममें जैन धर्मका आश्रय प्राप्त होकर यह सब कर्म बंधनोंसे मोक्ष प्राप्त करे ।

इस छोटेसे चरित्रसे बालिकाओंको और बड़ी उम्रकी स्त्रियों-को यही शिक्षा लेनी चाहिए कि अपने मनुष्य जन्मको देवगुरुकी भक्ति और परोपकार करके कषायोंको मंद करके शुभकरणी करते हुए अपना जन्म सार्थक करें ।

यह पुस्तिका इस बालिकाके स्मरणार्थ प्रकाशित की जाती है आशा है कि सुज्ञ जन इसको यूं ही न रखते हुए सदुपयोग करके पूर्ण लाभ प्राप्त करेंगे एवम् दूसरोंको भी लाभ प्राप्त हो ऐसा यत्न करेंगे । शान्ति !!!

परिचायिक—

झमकलाल रानड़िया ।
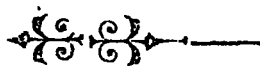
सेठ शंकर लालजी पीया प्रतापगढ (मालवा) की सुपुत्री
मानकुंवरबाई लघु बालीका का

जन्म संवत् १९६६. देहान्त संवत् १९७२

चैत्यवंदन सामायिक विधि.

हिन्दी अर्थ सहित

और

श्रावकका नित्य कृत्य।

॥ अथ नमस्कारमंत्र ॥

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥
नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥
नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥
एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥
मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

अर्थ-- बारह गुणों सहित और चार घाति कर्मोंके हननेवाले ऐसे अरिहन्त भगवानको (मेरा) नमस्कार हो। आठ कर्मोका क्षय करके मोक्षमें पहुंचे हुए अर्थात आठ गुणोंसे युक्त ऐसे सिद्ध भगवानको (मेरा) नमस्कार हो। छत्तीस गुणोंसे संयुक्त ऐसे आचार्य महाराजको (मेरा) नमस्कार हो। पचीस गुणोंवाले उपाध्याय महाराजको (मेरा) नमस्कार हो। (अढाईद्वीप प्रमाण) मनुष्यलोकमें रहे हुए सत्ताईस गुणोंसे शोभित ऐसे मुनिराजोंको (मेरा) नमस्कार

हो। ये उपरोक्त पांच (परमेष्ठी) नमस्कार, सर्व पापोंके नाश करनेवाले हैं। यह नवकार मंत्र सर्व मंगलोंमें प्रथम मंगल है।

जिनमंदिरमें द्रव्य और भावपूजा करनेकी संक्षेप विधि।

श्री जिनमंदिरमें जाकर द्वारमें प्रवेश करके पहले "निस्सहिः" (सांसारिक सावद्य कार्य छोड़नेरूप) कहना चाहिये।

मंदिरजीका काम (काज) **व कचरा जाला वगैरहकी** संभाल करकर (स्वयम् करने योग्य हो सो खुद करे और अन्यसे कराने योग्य हो सो अन्यसे कराना चाहिए) फिर दूसरी "निस्सहिः" करके मंदिरका कार्य छोड़कर तीन प्रदक्षिणा भगवान्‌के दाहिनी तरफसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्‌चारित्रकी आराधनारूप देनी चाहिये।

यदि प्रभुकी अङ्गपूजा करनी हो तो शरीर शुद्धि करके शुद्ध छने हुए जलसे **स्नान** करके तथा शुद्ध (उमदा) वस्त्र पहनकर मुखकोश बांधके पीछे तीन प्रदक्षिणा उपरोक्त विधिपूर्वक देकर जिनमंदिरमेंसे कचरा आदि साफकर मयूर पिच्छसे प्रभुकी अङ्गप्रमार्जना करके जीवजंतुकी रक्षा करके फिर विधियुक्त पूजन करना चाहिये।

भगवान्‌की डावी बाजू धूप खेवना, तथा दाहिनी बाजू घृतका (कंदीलमें) दीपक करना चाहिये।

'पंचामृत'से* प्रक्षालकर शुद्ध जलसे स्नान कराके तीन अङ्गलूहणा करके केसर चंदन बराससे नव अङ्गपूजा,× करनी, पीछे शुद्ध

---

* दूध, दधि, घृत, शक्कर, और जल, पंचामृत कहा जाता है।

× २ चरण, २ घुटन, २ पहुंचे, २ खभे, (कधे) मस्तक, ललाट, कंठ, [illegible] और [illegible] ये नौ अ[illegible] ने जाते हैं।

पंचवर्णके पुष्प चढ़ाकर हार और मुकुट कुंडल आभूषण धारण कराना चाहिये और अङ्गरचना करना चाहिये।

अष्ट द्रव्य* आदिसे अग्र पूजा करके आरती मङ्गलदीपक उतारकर पीछे चतुर्गति निवारणरूप चांवलका स्वस्तिक (साथिया) करके ऊपर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्चारित्ररूप तीन पुंज (ढगलिगं) बनाकर ऊपर चन्द्राकार सिद्ध शिला बनाकर सिद्धरूप ढगली उसके ऊपर करके फल चढ़ाना चाहिये।

तीसरी " निस्सहिः " कहके भाव पूजा करनी यानी मन, वचन, और कायारूप तीन खमासमणा देना चाहिए।

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएण वंदामि ॥

(विधि) यह मन, वचन, कायासे तीनवार खमासमणा देकर स्त्रीको भगवान्के बांई (डावी) तरफ पुरुषको दाहिनी (जीमणी) बाजू बैठके डाबा गोड़ा ऊंचा रखकर विधिपूर्वक चैत्यवंदन करना चाहिए।

अर्थ—हे क्षमाश्रमण ! मैं पाप व्यापारका निषेध करके शरीरकी शक्तिसे आपके चरणकमलोंमें इच्छा करके नमस्कार करता हूं—मस्तकसे वंदना करता हूँ।

नोट—यह पाठ वीतराग देवके सम्मुख खड़े हो दोनों हाथ जोड़ पंचांग (दो हाथ, दो घुटने और पांचवां मस्तक) जमीनसे

---

*न्हवण (जल) विलेपन, कुसुम, (पुष्प) धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, और फल, ये अष्ट द्रव्य हैं।

लगाकर वंदना करनेका है, और गुरु वन्दनके समय भी कहा जाता है।

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूंइच्छं।

विधि—ऐसा आदेश लेकर बैठके डावा गोड़ा ऊंचा रखकर पाठ करना चाहिए।

जगचिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण। जगबंधव जगसत्थवाह जगभाव विअक्खण॥ अट्ठावयसंठविअरूव कम्मट्ठ विणासण। चउवीसंपि जिणवर जयंतु अप्पडिहयसासण॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्म भूमिहिं, पढम संघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ॥ नवकोडिहिं केवलीण, कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ। संपइ जिणवर वीस मुणि विहुंकोडिहिं वरनाण समणह कोडिसहस्स दुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणि॥२॥ जयउ सामी जयउ सामी रिसह सत्तुंजि, उज्जिंत पहुनेमिजिण॥ जयउ वीर सच्चउरिमंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय मुहरिपास दुह दुरिअखंडण, अवर विदेहिंतित्थयरा॥ चिहुंदिसि विदिसि जिंकेवि तीआणागयसंपइअ॥ वंदुं जिण सव्वेवि॥३॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ॥ बत्तीसयबासि ..., तिअलोए चेइए वंदे॥४॥

पनरसकोडिसयाइं, कोडिबायाल लक्ख अडवन्ना ॥
छत्तीस सहस्स असियाइं, सासयबिंबाइं पणमामि

(नोट) इसके स्थानमें और भी चैत्यवंदन इच्छा हो सो बोल सकते हैं।

अर्थ—जगको अर्थात् भव्य जीवोंको मन इच्छित पदार्थ देते हैं इसलिए प्रभु चिंतामणि रत्न-समान हैं। धर्म रहित भव्य जीवोंको धर्ममें लगानेसे तथा धर्मवालोंके धर्मकी रक्षा करनेसे प्रभु नाथ हैं। हितोपदेश देते हैं इसलिए प्रभु गुरु-(बड़े) हैं। षट्काय जीवोंकी रक्षा करनेसे प्रभु रक्षक हैं। सब जीवोंका हित चिंतवन करनेसे प्रभु भाईके समान हैं। भव्य जीवोंको निरुपद्रवतासे मोक्ष नगर पहुंचाते हैं, इसलिए प्रभु सार्थवाह हैं। तीन लोकमें रहे हुए नव तत्त्वादि पदार्थोंको केवलज्ञान द्वारा अच्छीतरह समझाते हैं, इसलिए प्रभु विचिक्षण हैं। जिन्होंकी मूर्त्तियें भरत राजाने अष्टापद पर्वत ऊपर स्थापन की हैं, जिन्होंने आठों ही कर्मोंका नाश किया है और जिन्होंकी शासन-शिक्षाओंको कोई भी नहीं हरण कर सकता, ऐसे ऋषभदेवादि चौवीस जिनेश्वर जयवंता वर्त्तो ॥ १ ॥ जिस भूमिमें राज सत्ता, व्यापार और खेतीवाड़ी आदि कर्म करनेके साधन हैं ऐसी पांच भरत, पांच ऐरवर्त और पांच महाविदेह, इन पंद्रह कर्म भूमियोंमें पहेले संघयणवाले जिसको वज्रऋषभनाराच कहते हैं और जिसके बराबर और कोई शरीर मजबूत तथा ताकतवर नहीं हो सकता है ऐसे शरीरवाले-उत्कृष्ट यानी ज्यादहमें ज्यादह एकसौ सत्तर जिनेश्वर, नवक्रोड़ केवलज्ञानी, और नव हजार क्रोड़ साधु पूर्वकालमें-श्री अजितनाथजीके समयमें-विचरते

थे, यह बात जिनागमसे मालूम होती है। आजकलके समयमें बीस जिनेश्वर, दो क्रोड़ केवल ज्ञानी, और दो हजार क्रोड़ साधु इन्होंकी हमेशा सुबहके वक्त स्तुति करते है॥ २ ॥ शत्रुंजय तीर्थपर श्रीऋषभदेव स्वामी जयवंता वर्तो। (उज्जित)गिरनार-तीर्थ-पर श्री नेमिनाथ स्वामी जयवंता वर्तो। सत्यपुरी (साचोर)के शोभा-भूत श्री महावीरस्वामी जयवंता वर्तो। भरूचमें श्री मुनि-सुव्रतस्वामी और मुखरी गांवमें श्री पार्श्वनाथ स्वामी ये पांचों ही जिनेश्वर दुःख तथा पापको नाश करनेवाले हैं और भी जैसे कि महाविदेह आदि पांच विदेह, पूर्व आदि चार दिशाएँ, अग्निकोण आदि चार विदिशाएँ और अतीत, अनागत तथा वर्त्तमान इन सबमें जो कोई जिनेश्वर विद्यामान हों उन सब जिनेश्वरोंको मैं वंदना करता हूं ॥ ३ ॥ आठ क्रोड़ छप्पन लाख सत्ताणवें हजार बत्तीससौं ब्यासी इतने तीन लोक संबंधी मंदिरोंको मैं वंदना करता हूं ॥ ४ ॥ पंद्रह अब्ज बयालीस क्रोड़ अट्ठावन लाख छत्तीस हजार अस्सी इतनी शाश्वती जिन प्रतिमाओंको वंदना करता हूं ॥ ५ ॥

॥ जं किंचि ॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए॥
जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

अर्थ—स्वर्ग, पाताल और मनुष्यलोकमें जो कोई नाम (रूप) तीर्थ हैं, और जो तीर्थङ्करोंके बिंब है, उन सबको मैं नमस्कार करता हूँ।

॥ नमुथ्थुणं (शक्रस्तव) ॥

नमुथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥१॥ आइ-गराणं तिथ्थयराणं सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्त-माणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहथ्थिणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोग हिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभ-यदयाणं, चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं, धम्म-नायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धराणं, विअट्ट छउ-माणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं, सव्व दरिसिणं, सिव मयल मरूअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुण रावित्ति सिद्धि गइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९ ॥ जेअ अईआसिद्धा, जेअ भविस्संतिणागए काले संपइ-अवट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

अर्थ—अरिहन्त भगवानको नमस्कार हो। जो धर्मप्रारंभ करनेवाले हैं, तीर्थके स्थापन करनेवाले हैं, स्वयं बोध पानेवाले हैं, पुरुषोंमें उत्तम पुंडरीक कमल और श्रेष्ठ गंधहस्ति समान हैं, लोकमें उत्तम हैं, लोकके नाथ हैं, लोकका हित करनेवाले हैं, लोकमें दीपक समान हैं, लोकमें प्रकाश करनेवाले हैं, अभय दान देने-

वाले हैं, श्रुतज्ञानरूप चक्षुके देनेवाले हैं, मोक्षमार्गके बतानेवाले हैं, शरण देनेवाले हैं, समकित देनेवाले हैं, धर्मके दाता हैं, धर्मके उपदेशक हैं, धर्मके नायक हैं, धर्मके सारथी हैं, चारगतिका अंत करनेवाले श्रेष्ट धर्म चक्रवर्ती हैं, अविनाशी उत्तम केवलज्ञान, केवलदर्शनके धारक हैं, जिनकी छद्मस्थावस्था दूर हुई है, राग-द्वेषको जीतने और जितानेवाले हैं, संसारसे तरने और तरानेवाले हैं, तत्त्वके जाननेवाले और जनानेवाले हैं, कर्मोंसे मुक्त और मुक्त करानेवाले हैं, सब जाननेवाले हैं, सब देखनेवाले हैं उपद्रव रहित निश्चल, निरोग, अनन्त, अक्षय, अव्यावाध अर्थात् पीड़ा रहित, और पुनरागमसे रहित हैं, ऐसी सिद्ध गति नामक स्थानको प्राप्त किये हुए हैं। उन रागद्वेषके क्षय करनेवालों और सब भयादिके जीतनेवालोंको (मेरा) नमस्कार हो। जो अतीत कालमें सिद्ध हुए, जो अनागतकालमें सिद्ध होंगे और जो वर्त्तमानकाल (महाविदेह क्षेत्र)में होते हैं, उन सबको त्रिविध (मन, वचन और काया)से मैं वन्दन करता हूं।

॥ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ॥
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

अर्थ---जितने भगवान्के मंदिर उर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यक् लोकमें हैं और उन सबमें जो प्रतिमाएं हैं, उनको मैं (यहां रहा हुआ) वंदन करता हूं।

विधि—एक खमासण देकर आगेका पाठ पढ़ना ।

॥ जावन्त केवि साहू ॥

जावन्त केविसाहू, भरहेरवय महाविदेहेअ ॥
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

अर्थ—जितने साधु पांच भरत, पांच ऐरवर्त और पांच महाविदेह, इन १९ क्षेत्रोंमें हैं, उन सबको (मेरा) नमस्कार (मन, वचन और कायासे) हो । जो तीन दंड (अशुभ मन, वचन और काय) से रहित हैं ।

॥ परमेष्ठि नमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

अर्थ—अरहन्त, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय और सर्व-साधुओंको (मेरा) नमस्कार हो ।

नोट—स्त्रीवर्गको इसके स्थानमें १ नवकार पढ़ना चाहिये ।

॥ उपसर्गहर स्तोत्र (स्तवन) ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥
विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ॥
तस्सग्गह रोग, मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहु फलो होइ ॥
नरतिरिए सुवि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं ॥३॥

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि कप्पपाय वब्भहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअसंथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण ॥
तादेवदिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

नोट—इसके बदले दूसरे स्तवन इच्छा हो वैसे बोल सकते हैं।

अर्थ—उपसर्गका हरनेवाला पार्श्व नामक यक्ष सेवक है जिनका, ऐसे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको मैं वन्दन करता हूँ। जो कर्म समूहसे मुक्त हैं, सर्पके विषको अतिशयसे नाश करनेवाले हैं, मंगल कल्याणके घर हैं, विषहर स्फुलिंग मंत्रको जो कोई मनुष्य सदैव कंठमें धारण करता है, उसके दुष्ट ग्रह, रोग, मरकी, दुष्ट ज्वर नाश होते हैं। यह मंत्र तो दूर रहा, केवल आपको किया हुआ नमस्कार भी बहुत फल देता है। मनुष्य, तिर्यंचमें भी जीव दुःख, दरिद्रता नहीं पाते। जो आपका सम्यक्त्वदर्शन पाते हैं, वह (दर्शन) चिन्तामणिरत्न और कल्पवृक्षसे भी अधिक है। भव्य जीव अजर अमर स्थान (मुक्ति) को निर्विघ्नतासे पाते हैं। हे महाशय ! इस प्रकारसे यह स्तवना करी। भक्ति समूहसे परिपूर्ण, अन्तःकरणसे हे देव ! बोधि बीज जन्म जन्ममें, हे पार्श्वजिनचन्द्र ! मुझे दो।

विधि—यदि और भी कोई स्तवन पढ़ना हो तो वह पढ़कर हाथ जोड़के मस्तकसे लगाकर "जयवीयराय" पढ़ना चाहिए।

जयवीयराय।

जयवीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ

भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठ फल सिद्धि ॥१॥ लोग विरूद्धचाओ, गुरुजणपूआ परथ्थकरणं च॥ सुह गुरु जोगो तव्वयण-सेवणा आ भव खंडा* ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआण-बंधणं वीयराय तुह समए॥ तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं॥३॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहि लाभोअ॥ संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्वकल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

विधि—बादमें पैरोंके अंगूठोंकि पास चार अंगुलका और एड़ियोंकि पास इससे कुछ कम फासला रख कर खड़े होकर हाथोंसे योगमुद्रा साधन करते हुए शेष विधि करना चाहिए।

॥ अरिहन्त चेइयाणं ॥

अरिहन्त चेइयाणं करेमि काउसग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए॥ बोहिलाभ वत्तिआए, निरुव-सग्ग वत्तिआए॥ २ ॥ सद्धाए मेहाए धीइए धार-णाए अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

---

* यहां तक पढ़कर आगेकी गाथाएं मुँहके आगे हाथ करके पढ़ना चाहिये।

अर्थ—अरिहन्तकी प्रतिमाओंको वन्दनार्थ मैं कायोत्सर्ग करता हूँ। वन्दन करनेके निमित्त, पूजन करनेके निमित्त, सत्कार करनेके निमित्त, सम्मान करनेके निमित्त; बोधिलाभके निमित्त, जन्म जरा मरणके उपसर्गोंसे रहित ऐसा मोक्षरूप स्थान पानेके निमित्त, श्रद्धासे, निर्मलबुद्धिसे चित्तकी स्थिरतासे, धारणासे और वार वार अर्थको विचार कर चढ़ते हुए भावोंसे काउस्सग्ग (कायोत्सर्ग) करता हूँ।

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए॥१॥ सुहुमेहिंअंग-संचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं॥ सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥२॥ एव माइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्जमे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं नपारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

अर्थ—नीचे लिखे हुए आगारोंके अतिरिक्त और जगह काय व्यापारका त्याग करता। ऊपरको श्वास लेनेसे नीचेको श्वास लेनेसे, खांसी आनेसे, छींक आनेसे, जमाही (उबासी) आनेसे, ओडकार आनेसे, नीचेकी वायु सरनेसे, चक्कर आनेसे,

पित्तके प्रकोपसे मूर्छा आनेसे, अंगके सूक्ष्म संचारसे, सूक्ष्म थूक अथवा कफ आनेसे सूक्ष्म दृष्टिके संचारसे, इन पूर्वोक्त बारह आगारोंको आदि लेकर अन्य आगारोंसे अखंडित, अविराधित (सम्पूर्ण) मुझे काउस्सग होवे। जहांतक अरिहंत भगवंतको नमस्कार करता हुआ न पारूँ, वहां तक कायाको एक स्थानमें मौन रखकर नवकार आदिके ध्यानमें लीन होनेके लिए आत्माको वोसिरता हूँ।

एक नवकारका कायोत्सर्ग करना चाहिए। काउस्सग्ग पूरा हो जानेपर "नमोअरिहंताणं" कह कर पारना और * नमोऽर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः कह कर नीचे लिखी स्तुति कहनी चाहिए।

॥ कल्लाण कंदं स्तुति ॥

कल्लाण कंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगुणिक्क ठाणं, भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥

नोट—इसके बदले दूसरी स्तुति इच्छा हो वैसी बोल सकते हैं।

अर्थ—कल्याणके मूल श्री प्रथम जिनेश्वरको, श्री शान्ति-

* (नोट) स्त्रियोंको यह न कहकर केवल "नमो अरिहंताणं" कहके स्तुति कहना चाहिये।

नाथको तथा मुनियोंके इन्द्र श्री नेमिनाथको, त्रिभुवनमें प्रकाश करनेवाले श्री पार्श्वनाथको अच्छे गुणोंके एक अद्वितीय स्थानक ऐसे श्रीवर्द्धमान स्वामीको (मैं) भक्तिपूर्वक वन्दना करता हूँ।

नोट—पीछे यदि प्रत्याख्यान करना हो तो इच्छामि खमासणो ० पूर्वक नवकारसीसे चउविआहार उपवास पर्यन्त यथाशक्ति पच्चक्खाण करें।

॥ नमुक्कारसहि मुट्ठिसहिका पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ ! चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि ॥

अर्थ—(उग्गए सूरे) सूर्योदयसे दो घड़ी पीछे नम्मुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ नवकार कहके मुट्ठीवालके पारू वहां तक नियम है (यहां नवकार कहके मुट्ठीवालके पच्चक्खाण पारना है) इसलिये इसको नोकारसी मुट्ठिसी कहते हैं।

(मुट्ठिसहिअं) का मतलब यह है कि जहां तक पच्चक्खाण पालकर मुट्ठी न खोलुं वहां तक पच्चक्खाण रहै।

चौविहंपि आहारं अशन (अन्न) पाणं (पानी) खाइमं (मेवा दूध आदि) साइमं (पान सुपारी इलायची आदि स्वादिष्ट) इन चार आहारका पच्चक्खाण करनेमें चार प्रकारके आगार कहे हैं।

अन्नथणा भोगेणं (भूलसे अथवा विना उपयोगसे भांगा लगे तो दूषण नहीं)

सहस्सागारेणं (कोई भी कार्य करते अकस्मात् अथवा स्व-भाविक मुंहमें कोई चीज आवे तो दूषण नहीं. जैसे कि शक्कर तोलते समय उड़कर मुंहमें आवे या बरसातकी फँवारें वगैरः ।

महत्तरागारेणं, कोई महत्कार्य उस व्रत पच्चक्खाणके फलसे भी अधिक फल देखकर वृहत्पुरुषोंके कहनेसे भंग लगे तो दूषण नहीं।

सव्वसमाहिवत्तिया गारेणं. कोई बड़ी बीमारीसे असमाधि अथवा सर्पादिके काटनेसे बेहोश (मूर्छित) हो जानेसे दवाई देवे तो दूषण नहीं। गुरूवोसिरे कहे परन्तु पच्चक्खाण लेनेवालेको वोसिरामी कहना चाहिये। इसके बाद कोई भी स्तोत्र अथवा स्तुतिके श्लोक इच्छा हो तो कहे। बादमें और भी आसपास वहां प्रतिमा विराजमान हों तो जाकर तीन खमासणादिसे नमस्कार करे।

त्रिकाल पूजन करना शास्त्रमें कहा है सो यथाशक्ति करनी योग्य है।

पीछे तीनवार 'आवस्सहि (इसका मतलब यह कि जो प्रतिज्ञा करी थी उससे मुक्त हुए) कहके घंटा बजाते हुए जिनालयसे बाहर जाना चाहिये।

मंदीरजीमें जघन्य १०, मध्यम ४२ और उत्कृष्ट ८४ आसातनाएं वर्जनी चाहिये।

दश बड़ी आसातनाओंके नाम।

१ तांबूल (पानखाना) २ पानी (जलपीना) ३ भोजन (खाना) ४ उपानह (जोड़ा) ५ मैथुन (कामचेष्टा) ६ शयन (सोना) ७ थूकना (खूखारना) ८ मात्रा ([illegible] करनी) ९

लघुनीति ९ उच्चार (दस्त करना) यानी बड़ी नीति १० जुवटे-जूआ खेलना यानी ताम चौपट्ट शतरंज कोड़ियें पांसे वगैरः। हथियार लकड़ी बूट जोड़ी आदि वेअदबीकी चीजें तथा राजकथा, देशकथा; स्त्री कथा, भोजन कथा अर्थात् पापयुक्त वार्त्तालाप आदि जिनमंदिरमें अवश्य त्यागना चाहिये। ८४ आसातनाएं दूसरे ग्रंथोंसे जान लेनी चाहिए।

॥ गुरु महाराजको वन्दन करनेकी विधि ॥

मन्दिरमें दर्शन करनेके वाद, यदि पंचमहाव्रतोंके धारन करनेवाले, और पांच समिति तीन गुप्ति दशविधयति धर्मके पालन करनेवाले ऐसे निर्ग्रन्थ (निस्पृही) गुरुका योग हो तो, उनके चरणकमलोंमें वन्दना करनेके लिए जाना, जिसकी विधि नीचे लिखे अनुसार है।

प्रथम दो खमासमण देकर खड़े हो इच्छकारी "सुहराइ०" का पाठ पढ़ें।

॥ अथ सुगुरुको सुखसाता पूछना ॥

इच्छाकारि सुहराई सुहदेवसी, सुखतप, शरीर, निराबाध, सुखसंयमयात्रा निर्वहते होजी? स्वामी शान्ति है जी? आहार पानीका लाभ देना जी।

अर्थ—इच्छापूर्वक हे गुरुजी! आप सुखसे रात्रिमें, सुखसे दिनमें, सुखसे तपश्चर्यामें, शरीर सम्बंधी निरोगतामें, सुखसे संयम यात्रा धारण करते होजी? स्वामी शान्ति है जी? आहार पानीका लाभ देनाजी और फिर एक खमासमण देकर अब्भुट्ठिआ पढ़े।

॥ अथ अब्भुट्ठिओ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर देवसिअं खामेउं? इच्छं! खामेमि देवसिअं

विधि—आगेका पाठ, पञ्चांग नीचे झुकाके दाहिना हाथ नीचे स्थापनकर बोलना चाहिए।

जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरीभासाए, जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा। तुब्भेजाणह, अहं न याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

अर्थ—हे भगवन्! (अपनी) इच्छा करके आदेश दो तो दिवसमें किये हुए अपराधोंको खमानेके लिये मैं खड़ा हुवा हूं। (तब गुरु कहें 'खामेह' अर्थात खमाओ फिर आगे कहना कि मैं भी यही चाहता हूँ। दिवस सम्बंधी पापोंको खमाता हूं जो कोई अप्रीतिभाव, विशेष अप्रीतिभाव उत्पन्न किया हो, आहारमें, पानीमें, विनयमें, वैयावृत्तमें, एकवार बोलानेमें, बारम्बार बोलानेमें, आपसे उच्चासनपर बैठनेमें, आपके बराबर आसनपर बैठनेमें, आपके बीचमें बोलनेमें आपकी कही हुई बात विशेषतासे कहनेमें जो कोई मैंने अविनय किया, हो, छोटा अथवा बड़ा, आप जानते हैं, मैं नहीं जानता वे मेरे सर्व पाप मिथ्या होवें।

विधि—फिर यदि पचक्खाण करना हो तो एक खमासमण देके खडे होकर गुरु मुखसे ग्रहण करना चाहिए।

और जब घर आवें तो पच्चक्खानका समय पूरा होनेपर (जैसे नवकारसीका सूर्योदय होनेसे २ घडी पूरी होजावे जब, पोरसीका एक प्रहर होनेपर इसी प्रकार और भी गुरुगम्यसे जान लेना) मुट्ठी बंद कर तीन नवकार गिनना (जिससे मतलब पच्चक्खान पारनेका है) पीछे मुंहमें अन्नपानी डालना चाहिए ।

इति भावार्थ सहित गुरु वंदनविधि समाप्त ।

नोट—प्रातःकालसे दो प्रहरतक देवसिअंकी जगह राइअं कहना और दोप्रहरसे रात तक देवसिअं कहना चाहिए ।

॥ अथसामायिक ॥

सांसारिक जीव अनादिकालसे भवभ्रममें पड़े रहनेके कारण प्रायः अधिकांश मोक्षप्राप्तिके साधनभूत शुद्ध चारित्रको ग्रहण नहीं कर सकते, अथवा यों कहा जाय कि मनुष्योंका अधिक वर्ग कर्मचक्रके वशीभूत होकर संयम धारण नहीं कर सकता; इस कारणसे परमोपकारी भगवानने मनुष्य मात्रको प्रतिदिन कमसे कम २ घड़ी (४८ मिनिट) तक "सामायिक" करनेके लिये इस कारण फरमाया है कि, भव्य जीव सामायिकके समय साधुके समान हो जानेसे अपनी शुभ भावनाओंके द्वारा कर्मोंकी निर्जरा करता हुआ अन्तमें अपनी आत्माका शुद्ध स्वरूप पहचान कर "शिव सुख" की प्राप्ति करे।

सामायिक लेनेकी विधि।

श्रावक श्राविकाओंको सामायिक लेनेसे पहले शुद्ध वस्त्र पहनना चाहिए। और अपने सामने एक ऊंचे आसनपर धार्मिक ग्रंथ या जपमाला आदि रखकर जमीनको साफकर (जीव जन्तुओंको व रजको चरवलादिसे पूंजकर) जो पुस्तकादि रखे हैं, उनसे एक हाथ चार अंगुल दूर आसन (बैठका) बिछाकर और चर्वला, मुहपत्ति लेकर शान्त चित्तसे बैठकर बांएं (डाबे) हाथमें मुहपत्ति रखकर सीधे (जीमने) हाथको स्थापन किये हुए ग्रंथादिके सन्मुख उलटा रखके एक नवकारमंत्र पढ़ना चाहिए। बादमें "पंचिदिअ संवरणो" का पाठउच्चारण करें। (जो

---

१ बने वहां तक सामायिक खड़े २ लेना चाहिये।

२ संक्षेपमें दिये हुए इन नामोंके पाठ आगे दिये हुए पाठोंसे जानने चाहिये।

गुरु स्थापनाचार्य हों तो उनके सामने इस पाठके पढ़नेकी आवश्यकता नहीं) पीछे "इच्छामि खमा समणो" देकर "इरिया वही" "तस्स उत्तरी" "अन्नत्थ ऊससिएणं" कहकर एक "लोगस्स" अथवा चार "नवकारका कायोत्सर्ग करना चाहिए। काउसग्ग पूर्ण होनेपर "नमो अरिहंताणं" कहकर काउसग्ग पारे और प्रकट लोगस्स कह कर "इच्छामि खमासमणो" कह कर "इच्छा कारेण संदिसह भगवन् सामायिक लेनेके लिए मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं" इस प्रकार कह कर पचास बोल सहित झुके हुए बैठकर मुहपत्तिकी पडिलेहना (प्रतिलेखना) करनी चाहिए। फिर खणासमणा पूर्वक "इच्छा कारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुँ इच्छं" कहे। फिर * "इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् सामायिक ठाऊं? इच्छं" कहकर खड़े हो दोनों हाथोंको जोड़कर एक नवकार पढ़कर गुरुके सामने "इच्छाकारि भगवन् पसायकरी सामायिक दंड उच्चरावोजी" ऐसे कहना चाहिए। फिर गुरु न हो तो अपनेसे जो गुणोंमें बड़ा हो, या जिसने पहिलेसे सामायिक ली हुई हो उनसे 'करेमिभंते' का पाठ उच्चारण करनेके लिए प्रार्थना करनी चाहिए, यदि अपने सिवाय और कोई न हो तो उपरोक्त रीत्यानुसार "करेमिभंते" का

---

* जहां "इच्छामि०" लिखा है वहां—"इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणिजाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि" यह खमासमणा समझना चाहिए। और जहां "इच्छा० लिखा हो वहां "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्" ऐसे समझना चाहिए।

पाठ स्वयं उच्चर लेना चाहिऐं। फिर " इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् बेठणे संदिसाहूं इच्छं " फिर " इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् बेठणे ठाऊं ? इच्छं " फिर " इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् सज्झाय संदिसाहूँ ? इच्छं " फिर " इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् सज्झाय करूं ? इच्छं " कहनेके पश्चात् तीन नवकार पढ़कर दो घड़ी यानी ४८ मिनिट तक धर्म ध्यान स्वाध्याय करना चाहिए।

॥ अथ पंचिंदिअ ॥

पंचिंदिअ संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंचविहायारपालण समत्थो ॥ पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥

इसके बाद खमासणा देना

अर्थ—शरीर, जिह्वा, नाक, आँख और कान इन पांच इन्द्रियोंके तेईस विषय उनके जो दो सो बावन विकार, उनको रोकना ये पांच गुण। तथा नव प्रकारसे शीलव्रतकी गुप्ति धारण करनी ये नौ गुण। क्रोध, मान, माया और लोभ इन चार कषायोंसे मुक्त होना ये चार गुण। इन उपरोक्त अट्ठारह गुणोंसे

---

१ पासमें चर्वला हो तो सामायिकमें खड़े होना और "करेमि भंते" का पाठ उचारण करना चाहिए, अन्यथा बैठे हुए ही सामायिक लेनी (उचरनी) चाहिए।

संयुक्त, जीव हिंसा न करनी, झूँठ न बोलना, चोरी न करनी, स्त्री सेवन न करना और परिग्रह न रखना, इन पांच महाव्रतोंसे भूपित ये पांच गुण। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य इन पांचों प्रकारोंके आचार पालन करनेमें समर्थ हों ये पांच गुण। चलनेमें, बोलनेमें, खानेमें पीनेमें चीज़ उठाने रखनेमें, और मल मूत्र परठनेमें विवेकसे कार्य करना जिसमें किसी जीवका नाश न हो, ये पांच समिति और मन, वचन, कायको वशमें रखना ये तीन गुप्ति इन आठोंको बराबर पालें ये आठ गुण। इन छत्तीस गुणों करके जो युक्त हों, वे मेरे गुरु हैं।

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मथ्थएण वंदामि ॥ ऐसा कहकर पीछे **इरिया वहि० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ उससिएणं०** तक कहना।

अर्थ—हे क्षमाश्रमण ! मैं पाप व्यवहारका निषेध करके शरीरकी शक्तिसे आपके चरण कमलोंमें इच्छा करके नमस्कार करता हूँ—मस्तकसे वंदना करता हूँ।

विधि-यह पाठ वीतराग देव और गुरु महाराजके और सामायिकके समयमें स्थापनाचार्य जो पुस्तक वगैरह रक्खे हों उनके सन्मुख खड़े हो दोनों हाथ जोड़ पंचांग (दो हाथ, दो घुटने और पांचवां मस्तक) ज़मीनसे लगाकर वन्दना करनेका है।

॥ अथ इरिया वहियं ॥

इच्छा कारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणा गमणे, ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा, उत्तिंग पणग दग, मट्टी, मक्कडा, संताणा, संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहिया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ, ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थ—हे भगवन् ! (अपनी) इच्छापूर्वक आदेश दो (तो) रास्ते चलते जो पाप लगा होवे उससे मैं निवर्तूं ? (तब गुरु कहे पडिक्कमह-निवर्त्तो) आपकी आज्ञा प्रमाण है, मैं मेरे मनकी इच्छापूर्वक पापसे निवर्तनेकी इच्छा करता हूं। मार्गमें चलते जिन जीवोंकी विराधना हुई होवे, जाने आनेमें जो कोई जीव खूंदे, सूके हरे बीज खूंदे, हरि वनस्पति खूंदी, ओसको, चिटियोंके बिलोंको, पांच रंगकी काई—नील फूलन आदिको, कच्चे पानीको, सचित्तमिट्टीको, मकडीके जालोंको मसलायाखूंदा, जिन जीवोंकी मैंने विराधना की या दुःख दिया हो, एक इन्द्रियवाले-पृथ्वी, जल, अग्नि वायु

और वनस्पति, दोइन्द्रिय-शंख जलोक, कृमि, लारीए, तेइन्द्रिय-मांकड, कानखजूरे, जूं, उदई, कुन्थु मकोडा, चौरिन्द्रिय विच्छु, भ्रमर, मक्खी, टीड़ी, डांस, पंचेंद्रिय-देव, मनुष्य तिर्यचादि सामने आते हुओंको मारे, जमीनके साथ मसले, एक दूसरेको इकट्ठे किये, छूकर दुःख दिया, परितप दिया, थका कर मुर्दा किये, उपद्रव किया, एक स्थानसे दूसरे स्थान पर रखे, आयुष्यसे चुकाए इन संबंधी जो कोई पाप मुझे लगा हो वह निष्फल होवे।

॥ तस्स उत्तरी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अर्थ-उस पापको शुद्ध करनेके लिए, उसका प्रायश्चित (आलोयणा) करनेके लिए, आत्माको शुद्ध करनेके लिए, आत्माको शल्य (माया नियाणं और मिथ्यात्वसे, रहित करनेके लिए, पापकर्मोंका नाश करनेके लिए, मैं कायव्यापारका त्याग करने रूप कायोत्सर्ग करता हूं।

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त मुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं

सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

विधि—यहां तक कहकर एक लोगस्सका या चार नवकारका काउस्सग्ग करना पिछे नमो अरिहन्ताणं कहके काउसग्ग पारकर प्रगट लोगस्स कहना—

अर्थ—नीचे लिखे हुए आगारोंके अतिरिक्त (और) जगह कायव्यापारका त्याग करता हूं। ऊपरको श्वास लेनेसे, नीचेको श्वास लेनेसे, खांसी आनेसे, छींक आनेसे, जम्हाई (उवासी) आनेसे, डकार आनेसे, नीचेकी वायु सरनेसे, चक्कर आनेसे, पित्तके प्रकोपसे मूर्छा आजानेसे, अंगके सूक्ष्म संचारसे, सूक्ष्म थूंक अथवा कफ आनेसे, सूक्ष्म दृष्टिके संचारसे, इन पूर्वोक्त बारह आगारोंको आदि लेकर अन्य आगारोंसे अखंडित अविराधित (सम्पूर्ण) मुझे काउस्सग्ग होवे। जहांतक अरिहंत भगवंतको नमस्कार करता हुआ न पारूं, वहांतक कायाको एक स्थानमें मौन रखकर, नवकार आदिके ध्यानमें लीन होनेके लिए आत्माको वोसिरता हूं।

॥ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउविसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं

च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमलम-णंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहियं पयासयरा सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

विधि—इसके बाद इच्छामि खमा० देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं इच्छं० कहकर मुह-पत्ति पड़ीलेहना इसके बीचमें मुहपत्तिके बोल बोलना ।

(मुहपत्ति पडिलेहण विधिके ५० बोल)

१ सूत्र अर्थ तत्त्वकरी सद्दहूं (दृष्टि पडिलेहणा)

३ सम्यक्त्वमोहिनी, मिश्रमोहिनी, मिथ्यात्वमोहिनी परिहरुं ।

३ कामराग, स्नेहराग, दृष्टिराग परिहरुं ।

(ये छः बोल मुहपत्तिको उलट पटल करते समय बोलने चाहिये ।)

३ सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं ।

३ कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरुं ।

३ ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरुं ।

३ ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना, चारित्र विराधना परिहरुं ।

३ मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति आदरुं ।

३ मनदंड, वचनदंड, कायदंड परिहरुं ।

(ये अठारह बोल, बाएं हाथकी हथेलीमें कहने चाहिये)
यहां तकके पच्चीस बोल मुहपत्ति पडिलेहनेके हैं ।
नीचेके पच्चीस बोल शरीर पड़िलेहनेके हैं:—

३ हास्य, रति, अरति परिहरुं (बाईं भुजा पडिलेहते)

३ भय, शोक, दुगंछा परिहरुं (दाहिनी भुजा पडिलेहते)

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या परिहरुं (ललाटपर)

३ रिद्धिगारव, रसगारव, सातागारव परिहरुं (मुखपर)

३ मायाशल्य, नियाणाशल्य, मिथ्यादंसणशल्य परिहरुं (हृदयपर)

२ क्रोध, मान परिहरुं (बाईंभुजाके पीछे) ।

२ माया, लोभ परिहरुं (दाहिनी भुजाके पीछे) ।

३ पृथ्वीकाय, अपकाय, तेऊकायकी रक्षा करूं (चर्वलेसे बाएं पैर पर) ।

वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायकी यतना करूं (चर्वलेसे दाहिने पैर पर)

इन बोलोंको किस प्रकारसे कहने चाहिये; इसकी विशेष समझ किसी जानकारसे मालूम करना उचित है ।

पुरुषोंको ये ५० बोल ही कहने चाहिए; परन्तु स्त्रियोंको ३ लेश्या, ३ शल्य, और ४ कषाय इन दश बोलोंके सिवाय (विना) ४० ही कहने चाहिए।

फिर खमासणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन सामायिक संदिसाहूं ? ' इच्छं ' कहे, फिर इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन सामायिक ठाउं ' इच्छं ' कहके खडे होकर दोनो हाथ जोड एक नवकार पढ़कर इच्छाकारी भगवन पसाय करी सामायिक दंड उच्चरावोजी ऐसा कहकर अपने ही (स्वयं) अथवा गुरुमुखसे करेमि भन्ते उच्चरे या उच्चरावे।

अर्थ—लोकको केवलज्ञान द्वारा उद्योत करनेवाले, धर्मतीर्थके प्रवर्त्तानेवाले, रागद्वेषको जीतनेवाले, कर्मरूप शत्रुको हनन करनेवाले जो केवलज्ञानी हैं ऐसे चौवीस तीर्थङ्करादिकी (मैं) स्तुति करता हूँ। (१) श्री ऋषभदेव तथा (२) अजितनाथको वन्दन करता हूँ। तथा (३) संभवनाथ (४) अभिनन्दन और (५) सुमतिनाथको (६) पद्मप्रभ (७) सुपार्श्वनाथ तथा राग द्वेष जीतनेवाले चन्द्रप्रभको वन्दन करता हूं। (९) सुविधिनाथ तथा (पुष्पदन्त) ऐसे दो नाम हैं जिनके (१०) शीतलनाथ, (११) श्रेयांसनाथ, तथा (१२) वासुपूज्य स्वामीको (१३) विमलनाथ, (१४) अनंतनाथको, जो रागद्वेषके जीतनेवाले हैं (१५) धर्मनाथ, (१६) शांतिनाथको मैं वन्दन करता हूँ। (१७) कुंथुनाथ, (१८) अरनाथ तथा (१९) मल्लिनाथको (२०) मुनिसुव्रतस्वामी (२१) नमिनाथको (२२) अरिष्ट नेमिको मैं

वन्दन करता हूं। (२३) पार्श्वनाथ (२४) श्री वर्द्धमान (महावीर) स्वामीको मैं वंदन करता हूँ। इस प्रकारसे मैंने स्तवनाकी, जिन्होंने कर्मरूप रज मैल दूर किये हैं, जिन्होंने जरा और मरणके दुःख क्षय कर दिये हैं ये चौवीस तीर्थङ्कर रागद्वेषको जीतनेवाले मेरेपर प्रसन्न हों। जिनकी कीर्ति की, वन्दना की, पूजाकी, जो लोगोंमें उत्तम सिद्ध भगवान हुए हैं वे (मुझे) आरोग्यता, समकितका लाभ (और) उत्कृष्ट प्रधान समाधि दो। चन्द्रसमुदायसे अधिकनिर्मलसूर्य समुदायसे अधिक प्रकाश करनेवाले (स्वयंभूरमण) समुद्र जैसे गंभीर, ऐसे सिद्ध परमात्मा मुझे मुक्ति दो।

॥ अथ सामायिकका पच्चक्खाण ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि. जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इसके बाद इच्छामिखमासमणो० इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् वेसणे संदिसाहूं ? 'इच्छं' इच्छामि खमासमणो० इच्छा० वेसणे ठाऊं ? इच्छं इच्छामि खमासमणो० इच्छा० सज्झाय संदि साहूं ? 'इच्छं' फिर इच्छामि खमासमणो० इच्छा० सज्झाय करूं ? 'इच्छं' पीछे तीन नवकार पढ़कर दो घडी (४८ मिनिट) तक धर्मध्यान—स्वाध्यायादिक करे पीछे पारे देखो विधिपाटमें।

अर्थ—हे भगवन्त ! मैं समतारूप सामायिक करता हूं। पाप सहित जोग मन, वचन और काय)का त्याग करता हूं। जहां तक उस नियमकी उपासना करूं वहां तक दो कारणसे करना नहीं। तीन योगसे मन, वचन और काय करके न करूंगा और न कराऊंगा, इस बातकी प्रतिज्ञा करके, हे भगव न्! मैं उस पापसे निवृत्त होता हूं। उसकी निन्दा करता हूं और गुरुके सामने प्रकट कह कर विशेष निन्दा करता हुआ, उससे आत्माको वोसिराता हूं।

सामायिक पारनेकी विधि।

"इच्छामि खमासमण" कहकर "इरियावही"से लगाकर एक "लोगस्सका का उसग तथा प्रगट लोगस्स" तक कहके "इच्छामिखमा० इच्छा मुहपत्ति पडिले हुं इच्छं" कहकर मुहपत्ति पडि लेनेके बाद इच्छामि खमा० इच्छा० समाइअंपारेमि ? * "यथाशक्ति" फिर इच्छामि खमा० इच्छा० सामायिअंपारिअं" 'तहत्ति" इस प्रकार कहकर दक्षिण दाहिने हाथको चर्वले या आसन पर रखकर मस्तकको झुकाते हुए एक नवकार मंत्र पढ़कर "सामाइयवयजुत्तो" पढ़े। पीछे × दक्षिण (जिमना) हाथको सीधा स्थापनाचार्यकी तरफ करके एक नवकार पढ़ना चाहिए।

---

* यदि गुरुमहाराजके समक्ष यह विधि की जाय तो पुणोविकायव्वं" इतना गुरुमहाराजके कहे बाद "यथाशक्ति" कहना इसी प्रकार दूसरे आदेशमें गुरुमहाराज कहे "आयारो न मोत्तव्वो" इतना कहे बाद "तहत्ति" कहना चाहिए।

× स्थापनाचार्य यदि पुस्तक मालासे स्थापन किये हों तो इसकी आवश्यकता है, अन्यथा नहीं।

॥ सामायिक पारनेकी गाथा ॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियम संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्ति आवारा ॥ १ ॥ सामाइ अंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधिसे लीई विधिसे पारी । विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वह सब मनवचन और कायसे मिच्छामि दुक्कडं ।

अर्थ–सामायिक व्रतमें जहां तक युक्त हो वहां तक अशुभ कर्मका छेदन करता है । (जितनी वार सामायिक करे उतनी वार) इसलिए सामायिक करते समय साधुके जैसा ही श्रावक भी है । इस कारणसे बहुत वार सामायिक करना चाहिए । सामायिक विधिसे लिया विधिसे पारा, विधि करते जो कुछ अविधि हुई हो वह सब मन, वचन और कायसे मिच्छामि दुक्कडं ॥

(नोट) " सामायिक विधिमें आए हुए शब्दोंका अर्थ "

इच्छं–आपकी आज्ञा प्रमाण है ।

सामायिक संदिस हूं मुझे सामायिक करनेका आदेश दो ।

सामायिक ठाउं–में सामायिककी स्थापना करता हूँ ।

इच्छकारी भगवन् ! पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी–हे भगवन् ! अपनी इच्छा पूर्वक कृपा करके सामायिक व्रतका पाठ उच्चरावोजी (फरमाइए)

बेसणे संदिसाहूं—मुझे आसनपर बैठनेका आदेश दो।

बेसणे ठाउं—मैं आसनपर बैठता हूं।

सज्झाय संदिसाहूं—मुझे स्वाध्याय करनेका आदेश दो।

सज्झाय करूं—मैं स्वाध्याय करता हूं।

सामाइअं पारेमि—मैं सामायिक पारता हूँ।

पुणोविकायव्वं—(गुरु कहे) फिर भी करो।

यथा शक्ति—जैसी मेरी शक्ति होगी।

सामाइअं पारिअं मैंने सामायिक पारली

आयारो न मोत्तव्वो (गुरु कहे) आचार (सामायिक) त्यागने योग्य नहीं है।

तहत्ति—आपका कहना ठीक है।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्-हे भगवान् (अपनी) इच्छा-पूर्वक आदेश दो।

सामायिक सूत्र हिन्दी अर्थ सहित समाप्त।

॥ श्री ॥

॥ सम्यक्त्व विचार ॥
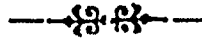
सुदेव, सुगुरु और सुधर्म पर शुद्ध श्रद्धानका होना सो ही सम्यक्त्व है।

(१) सुदेव—श्री अर्हन्त सर्वज्ञ द्वादश (१२) गुणोंसे संयुक्त और रागद्वेषादि अष्टादश (१८) दूषणोंसे रहित हों वे ही सुदेव हैं।

(२) सुगुरु—पांच महाव्रत धारक, कनक कामिनीके त्यागी, निर्ग्रन्थ, सर्वज्ञ प्रणित धर्मके उपदेशक हों वे ही सुगुरु हैं।

(३) सुधर्म—अनेकान्त स्याद्वादमय, केवली भगवानका कथन किया हुआ, दयायुक्त, सर्व जीवोंको हितकारक हो वही सुधर्म है।

उपरोक्त तत्त्वत्रयके श्रद्धानको सम्यग्दर्शन कहते हैं। इससे विपरीत कुदेव, कुगुरु और कुधर्म पर जो श्रद्धान हो, उसको मिथ्यात्व कहते हैं, जो त्यागने योग्य है। सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र (रत्नत्रय) ही मोक्षका मार्ग है, जो धारण करने योग्य है।

श्रावकके षट्कर्म।

देवपूजा गुरूपास्तिः, स्वाध्यायः संयमस्तपः ॥
दानं चेति गृहस्थानां, षट् कर्माणि दिने दिने ॥१॥

१ देवपूजा—जिनेन्द्र भगवानकी भक्ति करना। २ गुरूपा-

स्ति—गुरु महाराजकी उपासना व सेवा सुश्रूषा करना । ३ स्वाध्याय–जैन शास्त्रोंका पढ़ना या सुनना । ४ संयम–सामायिक करना और इन्द्रियोंका दमन करना । ५ तप– उपवासादि व्रत पच्चखाण करना । ६ दान–सुपात्रादि दान देना, परोपकार एवम् सुकार्योंमें द्रव्यादि व्यय करना । उपरोक्त षट्कर्मोंका संक्षेपसे विवेचन किया जाता है ।

देवपूजा ।

रागद्वेषादि अठारह दूषणोंसे रहित और बारह गुणोंसे युक्त श्री वीतराग तीर्थंकर महाराजकी भक्ति उनकी प्रतिमा (मूर्ति) द्वारा, चैत्यवन्दनमें द्रव्य और भावपूजाके स्वरूपमें लिखा गया है उस रीतिसे, विविधपूजा, भावना, भक्ति, रथयात्रा उत्सवादि अनेक प्रकारसे की जा सकती है ।

श्री अर्हन्त देवकी पूजा भक्तिसे भव्य जीव पूर्वजन्मोंके बंधे हुए पापकर्मोंको क्षय करके दुर्गतिका निवारण करता हुआ पुण्योपार्जन कर कर सद्गतिकी प्राप्ति कर सकता है ।

स्मरण रहे कि, उपयोग रहित सरल भावसे की हुई द्रव्यपूजासे द्रव्यप्राप्ति, राज्यऋद्धि, लोकयश, सत्कीर्ति, राज्य-सत्कार, अच्छा रूप, आरोग्यता, देवलोकका स्वर्गसुख, आदि अनेक प्रकारके सुखोंकी प्राप्ति होती है तो भावयुक्त विधिपूर्वक की हुई पूजासे तो मनुष्य आत्मिक अनन्त सुखोंका अनुभव करता हुआ आवश्य ही मोक्ष (वास्तविक सुख) की प्राप्ति कर सकता है, अर्थात् देवादिदेवकी शुद्ध भावसे पूजा करनेवाला–पूजक निस्सन्देह पूज्य हो जाता है ।

गुरु भक्ति ।

पंच महाव्रत धारक, पांच समिति, तीन गुप्ति संयुक्त क्षमादि दसविधिसे यतिधर्मके पालक, कनक कामिनिके त्यागी, निर्ग्रन्थ (निस्पृही) शत्रु मित्र पर समदृष्टि रखनेवाले, स्वयम् तैरते हुए अन्य भव्य जीवोंको जीव, अजीव आदि नवतत्व, षट् द्रव्यके गुण पर्याय नित्यानित्य जगत् स्वरूप स्याद्वाद शैली द्वारा भवोदधिसे पार उतरनेके लिए मार्ग बतलानेवाले, आत्मार्थी हों और मंत्र तंत्रादि चमत्कार बताकर अपनी प्रतिष्ठा चाहनेवाले न हों, ऐसे मुनि महाराजकी उपासना (भक्ति) करनी चाहिए। ऐसे गुरु संसार समुद्रसे तारनेके लिए नौका सम न हैं। माता पिता, भाई बहन, स्त्री पुत्रपुत्री, स्वामी राजा, आदि कोई भी सहायभूत नहीं हैं, केवल गुरुकी देशना (उपदेश) ही आत्माको तारनेके लिए समर्थ है अतएव उनकी (साधु साध्वीकी) भक्ति, निर्दोष आहार पानी, वस्त्र पात्रादि उपकरण, व ठहरनेके लिए आसन आदि देने, सेवासुश्रूषा, वन्दन और स्तुति करनेमें असीम पुण्योपार्जन होता है।

प्रत्येक मनुष्यको उपर्युक्त नौ प्रकारसे गुरुभक्ति करनी चाहिए। सद्‌गुरुका उपदेश श्रवण कर उसको धारण करना चाहिए ताकि आत्माका कल्याण हो।

स्वाध्याय ।

सर्वज्ञ वीतराग देवके कथन किये हुए शास्त्र, सूत्र, सिद्धान्तोंका सुनना, पढ़ना पढ़ाना जीव अजीवादि नौ तत्त्वोंका, षट्-द्रव्य, चार निक्षेप, सप्तभंगी, सप्त [illegible] स्याद्वाद [illegible]

पुरुषोंके चरित्र और स्वर्ग, मध्य व पाताल लोकके स्वरूपका वर्णन, देशवृत्ति (श्रावक धर्म), सर्ववृत्ति (मुनिधर्म)का उपदेश, इव चार अनुयोगोंका कथन, सम्यक्प्रकारसे द्वादशाङ्ग वाणीरूप जैनशास्त्रोंका किया हुआ अभ्यास, वांचन, प्रश्न, प्रावर्त्तन और अनुप्रेक्ष धर्मकथा इसतरह पांच प्रकारका स्वाध्याय, गुरुधर्मको शुद्ध स्वरूप, कृत्याकृत्य, भक्षाभक्ष्य पेयापेय, योग्यायोग्य, धर्माधर्म, सदाचार और सत्क्रियाका मार्ग बतानेवाला है।

विना शास्त्राभ्यासके किसी भी पुरुषकी की हुई सब धार्मिक क्रियाएं व्यर्थ हैं। विना ज्ञानकी क्रियएं मिथ्या हैं। ज्ञान सर्व देशी है क्रिया एक देशी है। अतएव भव्य जीवोंको धर्मशास्त्रका अभ्यास करना, पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना, जहांतक जितना बन सके वहांतक उतना अवश्य प्रतिदिन करना चाहिए। शास्त्र द्वारा ही शुद्ध सम्यक्त्वकी प्राप्ति होती है और अनुक्रमसे कर्मोका क्षय करके जीव अक्षय सुखका भोगी बन सकता है। साधु महात्माओंका योग मिलनेसे शास्त्र श्रवण, पठन पाठन. अवश्य करना चाहिए। षट्मतके शास्त्रोंके देखनेसे जैनधर्मके शास्त्रोंका महत्त्व, उनकी उच्चता और रहस्य ज्ञात होनेसे उनपर पूर्ण श्रद्धानका हो जाना संभव है। धार्मिक शास्त्रोंका अभ्यास करते हुए यदि अकस्मात् मृत्यु भी होजाय तो देवगति प्राप्त होती है।

संयम।

संयम—चारित्रको कहते हैं। गृहस्थको भी उचित है कि, देशसे दो घडी सामायिक लेकर पंच परमेष्ठीका स्मरण नौकारवाली

द्वारा या अन्य प्रकारसे करे। प्रतिक्रमण, धर्मशास्त्रका अभ्यास (स्वाध्याय) पौषध आदि करना देशविरति संयम है।

यावज्जीवन पंचमहाव्रत धारण करना, यति धर्म पालना, सर्वविरति संयम है। पांचों इन्द्रियोंका दमन करना, आश्रवको रोककर संवरमें प्रवृत्ति करना, द्रव्य सामायिक है। मनको वश करके सर्व जीवोंके साथ समता भाव रखना, शुद्ध द्वादश भावना भाना, आर्त्त, रौद्र, ध्यानका परित्याग करके धर्म ध्यानमें शुभ अध्यवसाय रखना, आत्मस्वरूपका चिन्तवन करना, यह भाव-सामायिक है।

भव्य जीवोंको देश सामायिक करते करते कभी सर्व विरति सामायिक (सम्यक्चारित्र) की भी प्राप्ति हो सकेगी और आत्माको निजगुणमें रमण करते हुए अक्षय सुखको प्राप्त करनेमें भी विलम्ब न लगेगा। यदि भवस्थितिमें देर हुई तो सद्गति तो अवश्य ही होगी।

भाव चारित्र, शुद्धक्रिया अवश्य सद्गति दायक है। इससे जीव नरक तिर्यन्चादि अशुभ गतियोंके द्वारोंको बंद कर देव, मनुष्यादि सद्गति पाकर सर्वोत्तम सामग्रियोंको भोगता है और अन्तमें वास्तविक सुख प्राप्त हो सकता है अतः प्रत्येक मनुष्यको दोनों वक्त सामायिक, प्रतिक्रमण आदि षड् आवश्यक नित्यकर्म अवश्य करने चाहिए।

तप।

जीवोंके अशुभ कर्मों (पापकर्मों) को जलानेमें ज्ञानयुक्त छेः प्रकारका बाह्य और छेः प्रकारका आभ्यंतर एवम् बारह प्रकारका

तप अग्नि समान है। कमसे कम दो घड़ीका किया हुआ नौका-रसी पच्चखाण भी सौ वर्षके नरकायुष्यको तोड़कर सुख सामग्री दायक है तो फिर विशेष उपवासादि तप करनेसे अवश्य ही अशुभ कर्मोंका नाश हो कर आत्माको देवगति आदि शुभ गतियोंके सुखों-की प्राप्ति होते होते अन्तमें मुक्तिरूप अविचल सुखका आनन्द भोग-नेके लिए साधनभूत होता है। दशविध पच्चख्खाणके फलका स्वरूप विस्तार युक्त पच्चखाण भाष्यादि शास्त्रोंसे मालूम करना चाहिए।

षट् प्रकारका बाह्य तप।

१ उपवासादि, २ उणोदरी (आहारको न्यून करना), ३ वृत्ति संक्षेप (व्रतोंमें जो चीज रक्खी हो उसमें भी चौदह नियमानुसार कम करना, ४ रसत्याग (षटरस तथा विगयका त्याग करना), ५ कायक्लेष (लौचादि करके शरीरको कष्ट देना) और ६ सलीणता (अङ्गोपाङ्गको संकुचित रखना)।

षट् प्रकारका अभ्यन्तर तप।

१. प्रायश्चित–किये हुए पापोंकी आलोचना करना तथा शुद्ध चित्तसे उभय काल प्रतिक्रमण करना, गुरुका दिया हुआ उपवासादि प्रायश्चित पूरा करना।

२. विनय–देव, गुरु, धर्म मातापिता वृद्ध गुणवानकी सात प्रकारसे विनय भक्ति करना।

३. वैयावच्च–१० प्रकारसे साधु साध्वी और स्वधर्मियोंकी अन्नवस्त्रादिसे भक्ति करना।

४. सज्झाय–सज्झाय, ध्यान, शास्त्रका पठन पाठन आदि ५ प्रकारसे स्वाध्याय करना।

५. ध्यान—ध्यान करना, आत्माका स्वरूप भावना और कायोत्सर्ग करना।

६. उपसर्ग—आये हुए उपसर्ग परिषहोंको सहन करना।

दान ।

दान शब्दका अर्थ त्याग है। "दीयते इति दानं"—अर्थात् न्यायोपार्जित द्रव्यको सुकृत कार्यमें व्यय करना उसका नाम सुपात्र दान है। दान पांच प्रकारका है यथाः—सुपात्र दान, अभयदान, अनुकम्पादान, उचित दान और कीर्ति दानः—

(१) देवगुरुकी भक्ति और स्वधर्मिवात्सल्य करना यानी स्वधर्मिको हर प्रकारसे सहायता देना, सात क्षेत्रोंमें * अपना द्रव्य लगाना उसको सुपात्र दान कहते हैं।

(२) अभयदान—जीवोंको घातसे बचाना 'द्रव्य अभयदान' है और धर्मोपदेश देकर जन्म मरणसे बचाना 'भाव अभयदान' है। यह पुण्य उपार्जन तथा निर्जराका कारण है।

(३) अनुकम्पादान—जीवमात्रको दुःखसे छुड़ाकर सुखी करनेकी इच्छासे दान पुण्य करनेको अनुकम्पादान कहते हैं और यह पुण्य उपार्जनका कारण है।

---

* चैत्य मन्दिर), प्रतिमा, पुस्तक (शास्त्र), साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ये सात क्षेत्र हैं। सहस्र, मिथ्यादृष्टिसे एक जिना श्री (सम्यक्त्वी) का पोषण करना, सहस्र जिनाश्रीसे एक अणुवृत्ति (देशविरति,का पोषण करना और सहस्र देशविरति (श्रावक)से एक महाव्रति (मुनि)-का पोषण करना अच्छा है। सहस्र महाविरतिसे एक तीर्थंकरकी भक्ति करना उत्तम है। तीर्थंकरके समान पात्र न भूतो न भविष्यति (न हुआ न होगा) और यह मुक्तिका साधन है।

(४) उचितदान—अपने आश्रित कुटुम्ब तथा बहन बेटी, भानजे नौकर आदिका पोषण करना—संभाल करना यह उचितदान (अपना कर्त्तव्य) है और यह संसार सुखका साधन है ।

(५) कीर्तिदान—जो शोभा बढ़ावें, विरुदावली बोलें, कविता करें, गुणगान करें, ऐसे याचक लोगोंको दिया जाय वह कीर्तिदान है और यशको पोषण करनेवाला है ।

उपरोक्त पांचों प्रकारके दान गृहस्थोंको करना चाहिए । अपना पैसा लेकर जीवहिंसा, कुव्यसन, आदि पापकार्योंमें खर्च करे वैसे हिंसकको दिया जाय वह कुपात्रदान है और ऐसे दानसे बचना जरूरी है ।

१ आहारदान, २ अभयदान, ३ औषधदान, और ४ विद्या-दान, इसतरह चार प्रकारसे भी कहे जाते हैं ।

(१) आहारदान—अन्न पानी आदि खानेपीनेकी वस्तुओंका देना आहार दान है ।

(२) अभयदान—मरते जीवोंको भय त्राससे बचाना अभय-दान है ।

(३) औषधदान—औषधालय, चिकित्सालय खोलकर मनुष्यों व चौपायोंको बीमारीसे बचानेके लिए उपचार (इलाज) करना कराना औषधदान है ।

(४) विद्यादान—पाठशाला, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्व-विद्यालय, छात्रालय (बोर्डिंग), कन्याशाला, श्राविकाशाला, उद्योगशाला आदि संस्थाएं खोलकर उत्तम अध्यापकों (मास्टरों) द्वारा लड़के लड़कियोंको धार्मिक, नैतिक, व्यावहारिक और शारीरिक शिक्षाएं प्राप्त कराना विद्यादान है ।

इन चारों दानोंके करनेवाले जन्म जन्मान्तरमें सुखी होते हैं, अर्थात् ज्ञान दानसे ज्ञानी होते हैं, अभयदानसे दीर्घायु और निर्भय होते हैं, अन्न दानसे नित्य सुखी रहते हैं और औषधदानसे निर्व्याधि यानी तन्दुरुस्त (आरोग्य शरीरवाले) रूपवान और बलवान होते हैं। तीर्थंकर महाराजने भी चार प्रकारके धर्मोंमें प्रथम दान धर्म कथन किया है। अतिथि सत्कार करना गृहस्थका मुख्य कर्त्तव्य है। इससे विपरीत, धर्मका द्रव्य यानी देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य, परोपकार सुकृत आदि धर्म कार्योंके लिए एकत्र किया हुआ द्रव्य खुद खाजानेवाला, कन्या विक्रय करनेवाला, झूठी साक्षी देनेवाला, छल कपट करके किसीकी अमानत वस्तुको हजम करनेवाला, विश्वासघात, महारंभ, कुव्यसन द्वारा पैसा पैदा करनेवाला, धर्म कार्य, दान पुण्यमें अन्तराय देनेवाला, जन्म जन्मान्तरमें महा दुःखी दरिद्री होता है और नरक आदि दुष्टगतिके दुःखोंको भोगता है, अतः इन पापोंसे बचना चाहिए।

दान देनेमें अन्तराय डालनेवाला पांच प्रकारके अन्तराय कर्म बांधकर गत्यान्तरमें दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य इन पांच वस्तुओंको प्राप्त करनेमें असमर्थ होता है।

हालमें पुद्गलनन्दी गृहस्थोंने, पानदान, इत्रदान, कलमदान, फूलदान, आदि 'दान'के नाम समझ रखे हैं, जो उचित नहीं हैं। देवगुरुकी भक्ति, तीर्थ यात्रा, दीन दुःखी और स्वधर्मीयोंका पोषण करना ही सच्चा दान व सुख प्राप्तिका साधन है और यह आत्मानन्दी धर्मज्ञ, उदार पुरुषोंको करना उचित है।

प्रत्येक गृहस्थको सदैव विचार करना चाहिए कि, आज मैंने इन षट्कर्मोंमेंसे कौन कौनसे कर्म किये और कितने न किये, जितने न हुए हों उनको यथाशक्ति पूरे करना चाहिए। फैशन-एबल बनकर विना उपयोगके साबुन तैल मर्दनकर अनछाने पानीसे स्नान करना, बीड़ी, सिग्रेट, चिलम, हुक्का, भांग, अफीम आदि सेवन करना, कोट पतलून चढ़ाकर बूटोंकी सफाई करना, होटलोंमें जाकर अभक्ष अनन्तकाय वस्तुओंका भक्षण कर वेश्या या परदारा गमन करके इन दुराचारोंको ही षट्कर्म कर लिया ऐसा समझना अधर्म है अतः ये दुराचार अवश्य त्यागने चाहिए।

कितनेक नई रोशनीके गृहस्थ कहते हैं कि हमेशा व्रत पच्चखाण परिग्रह प्रमाणका करना व्यर्थ झंझट और भूखों मरना है और बजट बनाकर उसकी पाबंदी करना व टाईमटेबल बनाकर उस माफिक कार्य करनेवालेको बड़ा ही मुन्तजिम व जेन्टिलमेन समझते हैं, तो क्या सर्वज्ञ कथित धर्मके माफिक चलने व उसका पालन करनेके लिए बजट बनाकर उसकी पाबंदी करना और शुभ कार्यमें टाईम लगाना आप हँसी समझते हैं?

जब डाक्टर साहबके कहनेसे लंघन या हरएक वस्तुका परहेज करनेको तय्यार होते हैं तो फिर भगवानके कहे हुए वचनोंकी पाबंदीसे क्यों विमुख रहते हैं? वकील, बेरिस्टरोंकी रायसे मुकद्दमे बाजीमें हजारों लाखों रुपयेका खर्च कर देते हैं, पर त्यागी गुरु महाराजके उपदेशसे धर्म कार्यमें पैसा व्यय करना व्यर्थ समझकर मुँह मोड़ते हैं तो कहिए हँसीके पात्र आप हैं या धर्मकी पाबंदी करनेवाला?

याद रहे कि धर्म-कार्योंके लिए बेपरवाही और हँसी करनेसे मृत्यु समय व जन्म जन्मान्तरोंमें महान् दुःखोंका सामना करना पड़ेगा, तब सिवाय पश्चाताप करनेके कुछ न बन सकेगा। कहावत है कि "हंसते बांधे कर्म न छुटे रोते हुए" इसलिए धर्म क्रिया ही आत्माको सुखप्रद है।

आशा की जाती है कि इस संक्षिप्त विज्ञप्तिको पढ़कर प्रत्येक गृहस्थ स्त्री पुरुष षट्कर्म करनेके लिए अवश्य उत्सुक होंगे।

श्लोक।

दर्शनाद् दुरितध्वंसी
वंदनाद् वाञ्छितः प्रदः॥
पूजनात् पूरकः श्रीणां
जिनः साक्षात्सुरद्रुमः॥ १ ॥

किं कर्पूरमयी सुचंदनमयी पीयूषतेजोमयी
किं चन्द्र चूर्णीकृत मंडलमयी किं भद्र लक्ष्मीमयी॥
किं वऽऽनन्दमयी कृपारसमयी किं साधुमुद्रामयी
ह्यन्तर्मेहृदि नाथ मूर्तिरमला नाभकर्किंकिंमयी॥२॥
विश्वानन्दकरी भवांबुधितरी सर्वापदां कर्तरी
मोक्षाध्वैकाविलंघनाय विमला विद्या परा खेचरी
दृष्टया भावित कल्मषापनयने बद्धा प्रतिज्ञा दृढा।
रम्यार्हत्प्रतिमा तनोतु भविनां सर्व मनोवांछितम्॥३॥

नित्यानंदपदप्रयाणसरणी श्रेयोऽवनी सारिणी ।
संसारार्णवतारणैकतरणी विश्वर्द्धि विस्तारिणी ।
पुण्याङ्कुरभरप्ररोहधरणी व्यामोहसंहारणी प्रीत्यै
स्ताज्जिनतेऽखिलार्तिहरिणी मूर्तिमनोहारिणी ॥४॥

अष्ट द्रव्य पूजनके दोहे ।

(प्रथम जल पूजन ।)

राग हरिगीत

गंगा नदी फुन तीर्थ जलसे कनकमय कलसे भरी ।
निज शुद्धभावे विमल थावे न्हवन जिनवरको करी ।
भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी ।
करू विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चयमनधरी ॥

(द्वितीय—चंदन पूजन ।)

सुरस चंदन घसिय केसर भेली मांहि बरासको ।
नव अंग जिनवर पूजते भवि पूरते निज आसको ॥
भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी ।
करूं विमलआतम कारणे व्यवहार निश्चय मनधरी ।

(३ पुष्प पूजन ।)

सुरभि अखंडित कुसुम मोगरा आदिसे प्रभु कीजिए ।
पूजा करी शुभ योग निग गति पंचमी फल लीजिए ॥
भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी ।
करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥

(४ धूप पूजन ।)

दशांग धूप धुखायके भवि धूप पूजासे लिए ।
फल उर्ध्वगति सम धूम दहि निज पाप भवभवके किए।
भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी ।
करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मनधरी ॥

(५ दीप-पूजन ।)

जिम दीपके परकाससे तम चोर नासे जानिए ।
तिम भाव दीपक ज्ञानसे अज्ञान नाश वखानिए ॥
भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी ।
करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मनधरी ॥

(६ अक्षत पुजन ।)

शुभ द्रव्य अक्षत पूजना शुभ स्वतिक सार बनाइए ।
गति चार चूरण भावना भवि भावसे मन भाइए ॥

भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी ।
करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मनधरी ॥

(७ नैवेद्य पुजा)

सरस मोदक आदिसे भरि थालि जिन पुर धारिए ।
निर्वेदिगुण धारी मने निज भावना जनि वारिए ॥
भवपाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी ।
करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मनधरी ॥

(८ फल–पूजन ।)

फल पूर्ण लेनेके लिए फल पूजना जिन कीजिए ।
पण इंद्रिदामी कर्म वामी शाश्वता पद लीजिए ॥
भवपाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी ।
करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मनधरी ॥

॥ इति ॥

नव अंग पूजनके समय नीचे प्रमाणे बोलना चाहिये ।

जलभरी संपुट पत्रमें, युगलीक नर पुजंत ।
रिखवचरण अंगुठडे दायक भवजल अंत ॥
जानु वले काऊसग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
खड़ां खड़ा केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥
लौकांतिक वचने करी, वरस्या वरसीदान ।

करकांडे प्रभु पूजतां, पूजो भवी बहु मान, ॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ।
भुजा बले भव जल तर्या, पुजो खंध महंत, ॥
सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकांते भगवंत ।
वसिया तिण कारण भवी, शिर शीखा पूजंत ॥
तीर्थंकर पद पुन्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥
सोल प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वरतूल ।
मधुर ध्वनि सुरनर सुणो, तिणे गले तिलक अमूल ॥
हृदय कमल ऊपशम वले, बाल्या रागरुरोष ।
हेम दहे वन खंडको, हृदय तिलक संतोष ॥
रत्नत्रयी गुण ऊजली, सकल सुगुण विसराम ।
नाभि कमलकी पूजना, करतां अविचल धाम ॥
उपदेशक नव तत्वना, तिणे नव अंग जीणंद ।
पुजो बहु विधराग से, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥

चैत्यवन्दन (प्रभुमूर्तिको नमस्कार)

सकलकुशलवल्लीपुष्करावर्त्तमेघो,
दुरिततिमिरभानुकल्पवृक्षोपमानुः
भवजलनिधिपोतः सर्व संपतिहेतु,
स भवतु सततं श्रेयसे श्री पार्श्वनाथः

अर्थ—समस्त कुशलोंकी वेल अर्थात् जैसे वेल फल फूलकी देनेवाली है, वैसे ही आप भवोभवमें कल्याणरूप फल फूलके दाता हैं। पुष्करावर्त्त मेघके समान अर्थात् जिस मेघकी वृष्टिसे १०००० वर्ष तक पृथ्वी तर रहती है और उससे सर्व वस्तुओंकी प्राप्ति होती रहती है, इसी प्रकार आपका एक बार स्मरण करनेसे भवभवमें सम्मार्गरूप फलकी प्राप्ति होती है। मिथ्यात्वरूप अंधकारको दूर करनेमें सूर्यके समान, मनोवांछित पूरनेमें कल्पवृक्षके समान, संसार समुद्रसे पार करनेमें नौका तुल्य मोक्षरूप-सर्व संपतिके देनेवाले, ऐसे श्री पार्श्वनाथ स्वामी सदैव तुम्हारे कल्याणके करनेवाले हों।

तीर्थोंका चैत्यवन्दन।

आज देव अरिहन्त नमुं, समरुं तारुं नाम।
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणीं, त्यां त्यां करुं प्रणाम।
शत्रूंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार।
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु रिखव जुहार।
अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चौवीशी जोय।
मणिमय मुरति मानिये भरते भरावी सोय।
सम्मेद शिखर तीरथ वड़ा, ज्यां वीशे जिनपाय।
वैभारिक गिरी ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय।
मांडवगढको राजियो, नामे देव सुपास।
रिखभ कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश।

(श्री पंच परमेष्टि चैत्यवंदन)

बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें भावे, सिद्ध आठ गुण समरतां दुःख दोहंग जावे ॥ १ ॥ आचारज गुण छत्रीस, पंचवीस उवझाय, सत्तावीश गुण साधुना, जपता सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टोत्तर सयगुण मली ए, एम समरो नवकार, धीरविमल पंडिततणो नय प्रणमे नित सार ॥ ३ ॥ इति

(तीर्थंकरके शरीर वर्णका चैत्यवंदन)

पद्मप्रभुने वासपूज्य, दोय राता कहियें,
चंद्रप्रभुनें सुविधि नाथ, दो उज्ज्वल लहियें,
मल्लिनाथ ने पार्श्व नाथ, दो नीला निरख्या,
मुनिसुव्रत ने नेमिनाथ, दो अंजन सरिखा,
सोले जिन कंचन समाए, एवा जिन चोवीस,
धीर विमल पंडित तणो, ज्ञान विमल कहे शीष्य, ॥ इति

(श्री सिद्धाचलजीका चैत्य वंदन)

श्री शत्रुंजय सिद्धखेत्र, दीठे दुर्गतिवारे ॥
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥
अनंत सिद्धनो एहठाम सकल तीरथनो राय ॥
पूर्व नवाणु ऋषभदेव, ज्यां ठविआ प्रभु पाय ॥ २ ॥
सूरजकुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम ॥
नाभिराया कुल मंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥

(श्री सीमंधर जिनस्तवन)

(चाल—भजनियोंकी)

श्री सीमंधर जिनराजजी, प्रभु अर्ज सुनो इक म्हारी, प्र० आंचली।
तुम दर्शनको चित हुलसावे, देव मदद देने नहीं आवे,
यहां बैठा विनवुं मैं भावे, मानो अर्ज महाराजजी,
मैं शरण लई है थारी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
पांचमें आरे मैं प्रभु जायो, दुपम काल महा दुख पायो,
अतिशय ज्ञानी कोइ न सहायो, सिद्ध करूं किम कामजी,
चिंता मनमें है भारी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
कर्म प्रभु मुझ पाछे लागे, पाप कराते हैं वो आगे,
पिण अब भाग्य प्रभु मुझ जागे, जान्यो गरीब निवाजजी,
दिलमें लियो धार विचारी ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
भाव धरी प्रभु नमन करत हुं, चरण शरण प्रभु मनमें धरत हुं,
वार वार प्रभु पांव परत हुं, ज्ञानवान शिरताजजी,
अवधारो जग हितकारी ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥
सम्यग्दृष्टि सुर सुरनारी, साधर्मी वत्सल दिल धारी,
कीजो अर्ज प्रभुको म्हारी, तारण तरण जहाजजी,
प्रभु शिव सुखपद दातारी ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥
दीनदयाल दयाकर स्वामी, आतम लक्ष्मी शिव सुख धामी,
आतम रूप आनंद पद पामी, सेवक दीन अपाजजी,
वल्लभ मांगे भव पारी ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ इति ॥

श्रीसिद्धाचलतीर्थस्तवन

॥ चाल—लावणी ॥

तीर्थ सिरि सिद्धाचल राजे, जहां प्रभु आदिनाथ गाजे । ती० आंचली

श्री सिद्धगिरि तीरथ वड़ो, सब तीरथ सिरदार,
गणधर पुंडरिक मोक्षसे, नाम पुंडर गिरिधार,
नाभिनंदन इण गिरि राजे ॥ ती० ॥ १ ॥
विमलाचल कंचनगिरि, सिद्धक्षेत्र शुभ ठाम,
जो सेवे भवि भावसे, पावे अविचल धाम,
धाम गुण गणका ये छाजे ॥ ती० ॥ २ ॥
जय जय श्री जिन आदि देव, धर्म धुरंधर जान,
पूर्व नवाणु नाथजी, आप पधारे आन,
आण ये तीरथकी वाजे ॥ ती० ॥ ३ ॥
यात्रा करनेके लिये, ठौर ठौरके लोग,
आते हैं शुभ भावसे, शुद्ध पुण्यके जोग,
पापी इण गिरि आते लाजे ॥ ती० ॥ ४ ॥
नंदन दशरथ रायके, रामचंद्र गुणधाम,
पांडव पांचो भरतजी, पाये पद अभिराम,
नाम सिमरनसे अघ भाजे ॥ ती० ॥ ५ ॥
दर्शन शुद्धि कारणे, यह तीरथ शुभकार,
द्राविड़ वारीखिल्लजी, दश कोटी परिवार,
आये शिवपुर लेने काजे ॥ ती० ॥ ६ ॥
सूरि शुक सेलक थया, थावच्चा ऋषि राय,
षट नंदन देवकी तणे, राम कृष्णके भाय.

हुए इण गिरि शिवपुर राजे ॥ ती० ॥ ७ ॥
रिसि तपी मुनि संयमी, रत्नत्रयीके धार,
अनसन करि मुगते गये, आतम वल्लभतार,
तारणे तीरथ सिरताजे ॥ तीरथ० ॥ ८ ॥ इति

श्री अष्टापद तीर्थ स्तवन ।

तीरथ अष्टापद नित्य नमीये, ज्यां जिनवर चउवीसजी, मणिमय बिंब भराव्यां भरते, ते वंदूं नित्य दीसजी ॥ ती० ॥ ॥ १ ॥ निज निज देह प्रमाणें मूर्ति दीठडे मनडुं मोहेजी, चत्तारि अठ दश दोय इणी परें, जिन चोवीशे सोहेजी ॥ ती० ॥ ॥ २ ॥ बत्रीश कोशनो पर्वत ऊंचो, आठ तिहां पावडीयो जी, एकेकी चउ कोश प्रमाणें, नवि जाये कोइ चडीयोजी ॥ ती० ॥ ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी चडीया लब्धें, वांद्या जिन चोवीशजी, जगचिंतामणि स्तवन त्यां कीधुं, पूगी मननी जगीशजी, ॥ ती० ॥ ॥ ४ ॥ तद्भव मोक्षगामी जे मानव, ए तीरथने वादेंजी. जंघा विद्याचारण वादें, ते तो लब्धि प्रसादेंजी, ॥ ती० ॥ ॥ ५ ॥ शाह सहससुत सगरचक्रीना, ए तीरथ सेवंताजी, बारमा देवलोकें ते पहोता, लेहशे सुख अनंतांजी ॥ ती० ॥ ॥ ६ ॥ कंचनमय प्रसाद इहां छे, वंदन करवा योग्यजी, ए अधिकार छे आवश्यक सूत्रें, जो जो दइ उपयोगजी ॥ ती० ॥ ॥ ७ ॥ जिहां आदीश्वर मुक्तें पहोता, अविचल तीरथ एहजी जशवंत सागर शिष्य पयंपे, जिनेंद्र वधते नेहजी ॥ ती० ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ गिरनार श्री नेमिनाथ जिन स्तवन

॥ राग मराठी लावणी ॥

नेमि निरंजन नाथ हमारे, मंजन मदन रदन कहीये, जिन राजुल त्यागी, रूपमें रंभा जगमें ना लहिये ॥ ने० ॥ १ ॥ अवर देव वामा वस कीने, भीने कामरसे गहीये, तूं अद्‌भुत जोद्धा, नामसे मार करमका जर दहीये ॥ ने० ॥ २ ॥ रेवताचल मंडन दुख खंडन, मंडन धर्मधुरा कहीये, तुम दरशन करके, पापके कोट छिनकमें सब ढहीये ॥ ने० ॥ ३ ॥ आतम रंग रंगीला जिनवर, तुमरी चरण सरन लहीये, तो अलख निरंजन, ज्योतिमें ज्योति मिलने संग रहीये ॥ ने० ४ ॥ इति

श्री समेतशिखरजीका स्तवन ।

(राग फगव्ह)

वस गीया वस गीया वस गीयारे मेरा मनवा ।
मेरा मनवा शीखर पर वस गीयारे ॥ मे० ॥ आंकणी ॥
समेतशीखर गिरिवरको भेटी ।
आनन्द हृदयमें भर गीयारे ॥ मे० ॥ १ ॥
धन्य घड़ी दिन आज हमारो ।
तीरथ भेटी तर गियारे ॥ मे० ॥ २ ॥
वीसे टुंके वीस जिनेश्वर ।
अजितादि प्रभु चड़ गीयारे ॥ मे० ॥ ३ ॥
अणशण करके कारज अपना ।
योग समाधीसे कर लीयारे ॥ मे० ॥ ४ ॥

अनन्तबली जिनवरको जाणी ।
मोहराय पिण डर गियारे ॥ मे० ॥ ५ ॥
करम कटण कल्याणिक भूमि ।
सब जिनवरजी कह गयारे ॥ मे० ॥ ६ ॥
पुन्योदयसें पास शामला ।
समेतशिखरपे दरश कियारे ॥ मे० ॥ ७ ॥
वीर विजय कहे तीरथ फरसी
आतम आनंद ले लीयारे ॥ मे० ॥ ८ ॥

॥ श्री आबुगिरि स्तवन ॥

डोसी तारो दीकरो द्वारिकां जाय छे ॥ ए देशी ॥

आबु गिरि राजनां देवल वखणाय छे, मने देखी लवुं देखी लवुं थाय छे ॥ आबु० ए आंकणी । संसारी उपाधि मने गमतिरे नथी, देवलमां दिल तणाय छे ॥ आबु० ॥ १ ॥ देराणी जेठाणी ना गोखलादिकनी[1], कोरणी अजब गणाय छे ॥ आबु० ॥ २ ॥

---

१ यद्यपि देराणी जेठाणीके गोखड़का प्रघोप प्रचलित है तथापि यह दोनो गोखड़ोंके उपर नीचे मुजब सुहड़देवीके नामका लेख कोतरा हुआ है ।

संवत १२९७ वैशाख वद १४ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय चंड प्रचंड प्रसादमहं श्री सौभन्वयेमहं । श्री आसराज सतमहं । श्री तेजः पालेन श्री मत्पत्तन वास्तव्यमोढ ज्ञातीयकाजल्हण सुतक । आशासुतायाः ठकुराज्ञी संतोषाकुक्षिसंभूतामहं । श्री तेजपाल द्वितीयभार्यमहं । श्री सुहडादेव्याः श्रेयोर्थं ॥

एहवां मंदिरनां दर्शन करतां पाप पाताले जाय छे ॥ आवु० ॥ ४ ॥ त्रिजीरे वार इहां यात्रा करीने, हंस आनंद अति पाय छे ॥ आवु० ॥ ५ ॥ इति

॥ श्री रिंगणोदमंडन पंच जिन स्तवन ॥

॥ अंब जीका लेलोशरण यह चाल ॥

अब तो उद्धारो मोय चाहिये जिणंद ॥ यह आंचली ॥

भव दरीयामें डुबतां देखे, नाथ निरंजन जगदानंद २ ॥अब॥१॥
जग उद्धारण कारण प्रगटे, रिंगणोदमें प्रभु पंच मुणिंद २ ॥अब॥२॥
देवी अंबिका साथ सुहावे, पंचमी गतिदायक सुखकंद २ ॥अब॥३॥
संवत् गुण्णी सो बहतर वर्षे, सातम वैशाख वदिको पसंद २॥अब॥४॥
नापित प्रजापतिके घर पासे, प्रगट भये देख दुनिया हसंद२॥अब५॥
मल्हाररांव महाराज राज्यमें, प्रगट होके कर दिया आनंद २॥अब६॥
खासे साहेब और दत्तात्रेय साहेब, नमन करी मदद देनाकहंद२॥अब७॥
राज्य प्रजामें आनंद फेलाया, मोरकों मेघ जैसे चकवाकोंचंद २॥अब८॥
दुख दरिद्र प्रभु नामसे नेडे, नावे जावे झट लगेला झंद २॥अब९॥
भूत पिशाच पलाय पलकमें, दुर्गतिके होय दरबाजे बंद २॥अब१०॥
रोग शोक भय त्रास न आवे, जो गावे तुम गुण गणछंद २ ॥अब१२॥
देश देशांतरसे संघ आवे, यात्रा निमित्त धरी हर्ष अमंद २ अब१३॥
स्तवन पूजनसें अर्ज गुजारे, आके यहां नर नारीके वृन्द २॥अब१४॥
लक्ष्मी विजय गुरुराय पसाये, हंस ग्रहे तुम गुण मकरंद २ ॥अब१५॥

---

१ इन्स्पेक्टर साहेब ॥

श्री तीर्थमाला स्तवन

शत्रुंजे ऋषभ समोसर्या भला गुण भर्याजी सिध्या साधु अनन्त तीरथ ते नमुंजी ॥ १ ॥ तीन कल्याणक तीहां थया मुगते गयाजी नेमीश्वर गिरनार ॥ तीरथ ॥ २ ॥ आबू चोमुख अति भलो त्रिभुवन तिलोजी विमल वसे वस्तुपाल ॥ ती० ॥ ३ ॥ अष्टापद एक देहरो गिरि सेहरोजी भरते भराव्या बिम्ब ॥ तीरथ ॥ ४ ॥ तारंगे अजितनाथ वन्दीए दुःख हारीएजी श्री कुमारपाले भर्या बिम्ब ॥ तीरथ ॥ खडग देश सोहामणो परचो घणोजी श्री ऋषभदेव भगवन्त ॥ तीरथ ॥ ६ ॥ नवा नगरना देहरा रलीयामणाजी राजसी शाहे भराव्या बिम्ब ॥ तीरथ ॥ ७ ॥ नयरी चंपा निरीखीए हैये हरखीएजी सिध्या श्री वासुपूज्य ॥ तीरथ ॥ ८ ॥ पूर्व दिशे पावापुरी ऋद्धे भरीजी मुगती गया महावीर ॥ तीरथ ॥ ९ ॥ समेत शिखर सोहामणो रलीयामणोजी सिध्या तीर्थंकर वीस ॥ तीरथ ॥ १० ॥ जेसलमेर जुहारीए दुःखवारीएजी अरिहन्त बिम्ब अनेक ॥ तीरथ ॥ ११ ॥ बिकानेरे वन्दिए चिर नन्दिएजी अरिहन्त देहरा आठ ॥ तीरथ ॥ १२ ॥ त्रैलोक्यदीपक देहरो जात्रा करोजी राणकपुर शहेर ॥ तीरथ ॥ १३ ॥ मक्षीजी मालव देशमें वही पुर भलोजी तीहां श्री पार्श्वकुमार ॥ तीरथ ॥ १४ ॥ सोरीसरो संखेसरो पंचासरोजी फल वृद्धि थंभण पास ॥ तीरथ ॥ १५ ॥ अन्तरिके अंजावरो अमीझरोजी जीरावलो जगनाथ ॥ तीरथ ॥ १६ ॥ मुनिसुव्रत भरूचमां कांवी गंधाहरोजी साचो देव जुहार ॥ तीरथ ॥ १७ ॥ पोसीनो चवलेश्वरो खोखो भलोजी श्री करेडा पास ॥ तीरथ ॥ १८ ॥ श्री नाडुलाइ जादवोगोडी

स्तवोजी श्रीवरकाणो पास ॥ तीरथ ॥ १९ ॥ बंभणवाडे वीरजी नवखण्ड तीलोजी मूछालो महावीर ॥ तीरथ ॥ २० ॥ नन्दीश्वरना देहरां बावन भलारे रुचक कुण्डल च्यार च्यार ॥ तीरथ ॥ २१ ॥ शाश्वती अशाश्वती प्रतिमा भलीरे स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ तीरथ ॥ एह तीरथ जात्रा फल मुजने हो जो इहांजी समय सुन्दर कहे एम ॥ तीरथ ॥ २२ ॥

(दीवालीका स्तवन)

भलाजी मेरा वीर गया निरवाण, एकिला होयके ॥मेरा०॥ ए आंकणी ॥ गौतम गणधर सोच करत है, भलाजी मेरा कोण होसे आधार ॥ ए० ॥ १ ॥ इंद्रभूति नामे करी मुजने, भलाजी कोण बोलावसे धरी प्यार ॥ ए० ॥ २ ॥ विनय करी तुम विन कीस आगे, भलाजी प्रश्न करूं जाइने उदार ॥ ए० ॥ ३ ॥ वीर वीर करतो इम गौतम, भलाजी वितराग थइ गयो लार ॥ए०॥ ४॥ पावापुरीमां विर प्रभुनुं, भलाजी सरोवर वीच देवल सार ॥ ए० ॥ ५ ॥ जेम मानससर राज हंसलो, भलाजी तेम देवल शोभे श्रीकार ॥ ए० ॥ ६ ॥ इति ।

(श्री पर्युषणका स्तवन)

दुनियामें आनंद छायारे, देखो पर्व पजुसन आयारे, कोई करे पूजा, कोई सुने पोथी, कोई शुभ ध्यान लगाया रे ॥ देखो पर्व पजुसन आयारे ॥ १ ॥ कोई करे बेला, कोई करे तेला, कोई कछु दान दीलायारे ॥ देखो पर्व० ॥ २ ॥ कोई सामाईक,

कोई प्रतीक्रमणा कोई पड़ह अमर वजायारे ॥ देखो पर्व० ॥ ३ ॥ धर्मकी करणी, भवजल तरणी, श्री मुख प्रभु फरमायारे ॥ देखो पर्व० ॥ ४ ॥ ये जिन सासन पर्व जीनन्दका, अभीरचन्द गुन गायारे ॥ देखो पर्व ॥ ५ ॥ इति ।

(अक्षय त्रीजका स्तवन्)

आदि जिनेश्वरे कियो पारणुं, एजिरस सेलड़ी ॥ आदि० ॥ घडा एकसो आठ सेलड़ी रस भरीया छे नीका, उलट भाव श्रेयांस वहोरावे, भाज दिया भव फेरारे। आदि० ॥ १ ॥ देव दुंदुभि वाज रहि है सोनैयाकी वीरखा बारे मासशुं कीयो पारणो गइ भूख सब तिरखारे ॥ आदि० ॥ २ ॥ रिद्धि सिद्धि कारज मनोकामना, घर घर मंगलाचार, दुनियां हर्ष वधामणां सिरे, अखा त्रिज तेहेवार ॥ आदि० ॥ ३ ॥ संकट काटो विघ्न निवारो, राखो हमारी लाज, वे करजोड़ी नान्हुकेता, रीखभदेव महाराजरे ॥ आदि० ॥ ४ ॥ इति

जिनदर्शन उमगाई आज में तो प्रभु दर्शन उमगाइ आज में तो ॥ जिन दर्शनसे जनम सफल हो वे भव भव पातिक जाइ ॥ आजमे० ॥ १ ॥ देखी छब भारी मूरत लागे मोहनगारी या तो ॥ हरक २ ही यडे नमाया आजमे० ॥ २ ॥ प्रातसमे सुचिकर द्रव्य आठ थालभर जिनचरन नमे चडाई आजमे० ॥ ३ ॥ चारो निक्षेपातो जानो जिन प्रतिमा सत्य मानो संका होवे तो जिन आगम लाय आजमे० ॥ ४ ॥ कहे श्रावक कर जोडी—पक्षपात देओ छोडी, अतमा पूजे तो शिवपूरको को जाय आजमे० ॥ ५ ॥

नव पद ध्यान धरोरे भवीका नवपद ध्यान धरो मन वच कायकरी एकान्ते वीकथा दूर हरोरे भवीका नवपद ध्यान धरो। मंत्र जडी अरू तन्त्र घनेरां ईन सबको वीसरोरे। अरिहंतादी नवपद जपता पूज्य भंडार भरोरे भलाका अष्ट सिधी नव निधी मंगल माल संपती सहजवरोरे भवीका नवपद ध्यान धरोरे भवीका। लालचंद्र या की बलीहारी सीवतरु फल खरोरे भवीका नवपद ध्यान धरो भवीका नवपद ध्यान धरो।

अथ पंचमीका स्तवन।

पंचमी तप तमे करोरे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञानरे, पहेलुं ज्ञान ने पछी क्रिया, नहीं कोई ज्ञान समानरे॥ पंचमी०॥ १॥ नंदी सूत्रमां ज्ञान वखाणुं, ज्ञानना पांच प्रकाररे, मति श्रुत अवधि ने मनः पर्यव, केवल एक उदाररे॥ पंचमी०॥ २॥ मति अठावीश श्रुत चऊदह वीश, अवधि छे असंख्य प्रकाररे, दोय भेदें मनः पर्यव दाख्युं, केवल एक स्विकाररे॥ पंचमी०॥३॥ चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपाररे, केवल ज्ञान समुं नहीं कोई, लोकालोक प्रकाशरे॥ पंचमी०॥ ४॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो ऊमेदरे, समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेदरे॥ पंचमी०॥ ५॥ इति।

॥ अथ श्री आदिनाथजीका स्तवन ॥

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधी काय।
कल्पवृक्ष परे तास इंद्राणी नयन जे, भृंगपरे लपटाय॥१॥

रोग ऊरोग तुज नवि नड़े, अमृत जेवा स्वाद।
तेहेथी प्रतिहत तेह मांनुं कोइ नवि करे जगमां तुमशुं वात ॥२॥
नगर धोइ तुज निरमली, काया कंचनवान।
नहि परस्वेद लगार तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरूं ध्यान ॥३॥
राग गयो तुज मन थकी, तेहमां चित्र न कोय।
रूधिर अमिशथी रोग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय॥४॥
श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वास।
देखे न आहार निहार चर्म चक्षुधणी, एवा तुंज अवदात॥५॥
चार अतिशय मूलथी, ऊगणीश देवना कीध।
कर्म खप्याथी अग्यार, चोत्रीश इम अतिशया समवायंगे प्रसिद्ध ॥६॥
जीन उत्तम गावतां, गुण आवे निज अंग।
पद्म विजय कहे एम समय प्रभु पालजो, जेम थाऊं अक्षय अभंग ॥७॥

अथ श्री सुमतिनाथजीका स्तवन।

सुखकारी, सुखकारी, सुखकारी, कृपानाथ हो जाऊं वारी, सुमति जिन समति सेवकने दीजियेजी ॥ ए आंकणी ॥ दरिसण देव दीजे, कुमतिकुं दूर कीजे, एही मागुं छु हे दातारी ॥कृपा०॥ १ ॥ कुमतिने कामण कीया, मुजको भरमाई दीया, इनसें छोड़ादो हे सरदारी ॥ कृपा० ॥ २ ॥ पंचम अवतार लीया, दुनियांकुं तार दीया, आशा पुरो कहुं छुं पोकारी ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ निरादर नाहीं कीज, विरुद्ध लीजे, तरण तारण छो हे अधिकारी ॥

कृपा ॥ ४ ॥ सीनोर मंडन नामी, सुमति जिनेश्वर स्वामी, वेड़ी ऊतारो प्रभुजी हमारी ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ निधि रसनिधि चंदा, संवत् है सुखकंदा, वीर विजयकुं आनंदकारी ॥कृपा०॥६॥इति ।

श्री सुमति जिन स्तवन

धन धनवो जगमें नर नार विमलाचलके जानेवाल, यहचाल

जय जय सुमति नाथ महाराज, शुभ सुमतिके देनेवाले । ए आंकणी॥ मेरु महिधर महाराज आतम सुधारण काज, तुम स्नात्र करे सुरराज, ताप संताप मिटानेवाले ॥ जय० २ ॥ १ ॥ संसार समुद्र अपार, जगदीश्वर पार उतार, रखो रक्षणके करनार, पार झटपट लंघानेवादे ॥ जय० ॥२॥ २॥ मैं दिन हुं आपदयाल, करो मेरा प्रभु कुछ ख्याल, निर्धनको कर दिये न्हाल, दान वार्षिकके देनेवाले ॥ जय० ॥ २ ॥ ३ ॥ हितकर पिताके समान, मातापरे अमृतदान, द्योसदा करु गुणगान. मानमद मर्दन करनेवाले. ॥ जय० ॥ २ ॥ ४ ॥ श्री परताप गढ़में सार बगीचाके विच मनोहार तुम देवल अति ही उदार, हंस सम भवोदधि तरनेवाले, ॥ जय जय० ॥ ५ ॥ इति

(श्री शांतिनाथ जिनस्तवन)

भविक जनशांति है जिन वंदो, भवभयना पाप निकंदो ॥ भविक० ॥ १ ॥ पूरव भव शांति करीनो; कापोत पाल सुख-

लीनो, करूणा रस सुध मन भीनो, तें तो अभयदान बहु दीनो ॥ भ० ॥ २ ॥ अचिरानंदन सुखदाई, जिन गर्भे शांति कराइ, सुरनर मिल मंगल गाइ, कुरु मंडन मारि नसाइ ॥ भ० ॥३॥ जग त्याग दान बहु दीना, पामर कमलापति कीना, शुद्ध पंच महाव्रत लीना, पाया केवल ज्ञान अईना ॥ भ० ॥ ४ ॥ जग शांतिक धरम प्रकासे, भव भवना अघ सहु नासे, शुद्ध, ज्ञानकला घट भासे, तुम नामे परम सुख पासे ॥ भ० ॥ ॥ ५ ॥ तुम नाम शांति सुख दाता, तुम मात तात मुझ भ्राता, मुझ तप्त हरो गुण ज्ञाता, तुम शांतिके जगत विधाता ॥भ०॥६॥

नामे नव निधि लहिये, तुन चरण शरण गहि रहिये, तुम अर्चन तन मन वहिये, एडी शांतिक भावना कहिये ॥भ०॥ ७ ॥ हुं तो जनम मरन दुःख दहियो, अब शांति सुधारस लहियो, एक आतम कमल उमहियो, जिन शांति चरण कज गहियो ॥ भ० ॥ ॥ ८ ॥ इति ।

श्रीमहावीर जिन स्तवन

गिरुआरे गुण तुम तण, श्री वर्धमान जिनरायारे ।
सुणतां श्रवणे अमी झरे माहरी निर्मल थाए कायारे ॥ गि० ॥१॥
तुम गुणगण गंगा जले हुं झीली निरमल थाउंरे ।
अवरन धंधो आदरुं निशदिन तोरा गुण गाउंरे ॥ गि० ॥ २ ॥
झील्या जे गंगा जले ते छिल्लर जल वी पेसेरे ।
मालती फूले मोहिया, ते बावले जइ नवी वेसेरे ॥ गि० ॥ ३ ॥

---

१. न्हाया. २. न्हाना तलावमें.

इम अने तुज गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वली माच्यारे ।
ते किम परसुर आदरुं, जे परनारी वश राच्यारे ॥ गि० ॥ ४ ॥
तूं गति तू मती आशरो, तूं आलंबन मुज प्यारोरे ।
वाचक जस कहे मोहरे, तूं जीव जीवन आधारोरे ॥ गि० ॥ ५ ॥

पारसनाथ ।

(वाला वेगे आवोरे—देशी)

चिंतामणि स्वामीरे, कहुं शिर नामीरे,
प्रभु सुनो विनती होजी.
पारस प्रभु तुम सम देव न कोय,
वारि जाऊं देख लिया जग जोय ॥ चिं० अंचलि
हम तुम सरिखा नाथजी, जीवन भेद लगार,
तुम निज रूपे रम रहे, हम रुलते संसार,
वारि प्रभु कर्म तणा ये प्रताप–चिं० ॥ १ ॥
काल प्रवाह अनादिको, चेतन कर्म संबंध,
दूर किया तुमने प्रभु, हम बिचमें रहे बन्ध,
वारी प्रभु तुम वर नहीं नहीं शाप–चिं० ॥ २ ॥
क्रोध मान माया अति, लोभ परम ये दोष,
अंश नहीं तुममें प्रभु, वीतराग गुण पोष,
वारी प्रभु चिदघन रूप अमाप–चिं० ॥ ३ ॥
निर्दोषीके ध्यानसे, ध्याता ध्येय अदोष,
पारस मणि कंचन करे, गुणी अलंबन जोश,

---

१. दूजा देषीको ।

वारि प्रभु सेवक सम संग आप–चिं० ॥ ४ ॥
लालबागमें रम रहे, निजगुण दीनदयाल,
मोहमयी नगरी खरी, पिण नहीं मोह जंजाल,
वारि प्रभु ये तुम निज गुण छाय—चिं० ॥ ५ ॥
आतम सत्ता सारिखी सब जग जीव स्वभाव,
आतम लक्ष्मी पामीये विघटे जीव विभाव,
वारि प्रभु वल्लभ हर्ष मिलप—चिं० ॥ ६ ॥

समोसरणका स्तवन.

॥ राग मराठीमें ॥

रिखव जिनन्द विमलगिरि मंडन, मंडन धर्म-धुरा कहीये। तुं अकल स्वरूपी, जारके करम भरम निज गुण लहीये ॥ रिखव० ॥ १ ॥ अजर अमर प्रभु अलख निरंजन, भंजन समर समर कहीये। तुं अद्भुत योद्धा मारके करम धार जग जस लहीये ॥ रिखव ॥ २ ॥ अव्यय विभु ईश जग रंजन, रूप रेख बिन तुं कहीये। शिव अचर अनंगी, तारके जग जन निज सत्ता लहीये ॥ रिखव० ॥ ३ ॥ शत सुत माता सुता सुहंकर, जगत जयंकर तुं कहीये। निज जन सब तारे। हमोसे अंतर रखना चहीये ॥ रिखव० ॥ ४ ॥ मुखडा भींचके बेठी रहना, दीन दयालको ना चहीये। हम तन मन ठारो, वचनसे सेवक अपना कह दइये ॥ रिखव० ॥ ५ ॥ त्रिभुवनईश सुहं कर स्वामी, अंतरजामी तुं कहीये ॥ जब हमकुं तारो, प्रभुसे मनकी बात सकल कहिये ॥ रिखव० ॥ ६ ॥ कल्पतरू चिंतामणी जाच्यो, आजनिरासे ना रहीये। तुं चिंतित दायक, दासकी

अरजी चित्तमे दृढ़ गहीये ॥ रिखव० ॥ ७ ॥ दीन हीन पर-गुण रस राची, सरण रहित जगमें रहीये । तुं करुणा सिंधु दासकी करुणा क्युं नहि चित गहिये ॥ रिखव ॥ ८ ॥ तुम बिन तारक कोई न दिसे, होवे तुमकुं क्युं कहीये । इह दिलमें ठानी, तारके सेवक जगमें जस लहिये ॥ रिखव ॥ ९ ॥ सातवार तुम चरणे आयो, दायक शरण जगत कहीये । अब धरणे बेशी, नाथसे मन वंछित सब कुछ लहीये ॥ रिखव० ॥ १० ॥ अवगुण मानी परिहरस्यो तो, आदि गुणी जगको कहीये । जो गुणी जन तारे तो, तेरी अधीकता क्या कहीये ॥ रिखव० ॥ ११ ॥ आतम घटमें खोज प्यारे, बाह्य भटकते ना रहिये । तुम अजय अविनाशी धार निजरूप आनंद धनरस लहिये ॥ रिखव० ॥ १२ ॥ आतमनंदी प्रथम जिनेश्वर, तेरे चरण शरण रहिये । सिद्धाचल राजा, सरे सब काज आनंद रस पी रहीये ॥ रिखव० ॥ १३ ॥

श्री अजितनाथ जिन स्तवन ।

सुणीयोजी करुणानाथ भवदधि पार कीजोजी,

॥ ए देशी ॥

तुम सुणीयोजी अजित जिनेस भवोदधि पार कीजोजी । तु० ॥ आंकणी ॥ जन्म मरण जल फिरत अपारा आदि अंत नही घोर अंधारा । हुं अनाथ उरभयो मझधारा । टुक मुझ, पीर कीजोजी । तुम० ॥ १ ॥ कर्म पहार कठन दुखदाइ । नाव फसी अब कौन सहाई । पूर्ण दयासिंधु जगस्वामी । झटती उधार कीजोजी । तुम० ॥ २ । चाग ७

सब जारे। जारे त्रिदेव इंद्र फुन देवा। मोह उवार लीजोजी ॥ तुम० ॥ ३ ॥ करण पांच अति तस्कर भारे। धरम जहाज प्रीति कर फारे। राग फांस डारे गर मारे। अब प्रभु झिरक दीजोजी ॥ तुम० ॥ ४ ॥ तृष्ण तरंगचरी अति भारी। बहे जात सब जन तन धारी। मान फेन अति उमंग चढयो है। अब प्रभु शांत कीजोजी ॥ तुम० ॥ ५ ॥ लाख चउरासी भमर अति भारी। मांही फस्यो हुं सुद्ध बुद्ध हारी। काल अनंत अंत नहीं आयो। अब प्रभु काढ लीजोजी ॥ तुम० ॥ ६ ॥ आतम रूप दव्यो सब मेरो। अजित जिनेसर सेवक तेरो। अब तो फंद हरो प्रभु मेरो। निरभय थान दीजोजी ॥ तुम० ॥ ७ ॥

॥ श्री संभवनाथ स्तवन ॥

॥ हिरणीयवचरे, ए देशी ॥

संभव जिन सुखकारीया ललना। पूरण हो तुम गुण भंडार। पूजा प्रभु भावसे ललना, दुख दुर्गति दूर हरे ललना। काटे हो जन्म मरण संसार। पद कज जो मन लावसे। ललना ॥ १ ॥ प्रथम विरह प्रभु तुम तणो ॥ ल० ॥ दूजो हो पूर्व धर छेद। देखो गति करमनी ॥ ल० ॥ पंचम काल कुगुरु वहु। ल०। पारयो हो जिनमत वहु भेद। बातको तरणकी ॥ ल० ॥ २ ॥ रागद्वेष वहु मन वसै। ल०। लरे हो जिम सौकण रांड। भूले अति भरममें ॥ ल० ॥ अमृत छोर जहर पिये। ल०। लीये हो दुख जिन मत छांड। बांध अति करममें ॥ ल० ॥ ३ ॥ करुणा रस भरे

। ल० । मनकी पीर न को सुने । कैसे हो करिये निरधार । प्रभु तुम धरममें ॥ ल० ॥ ४ ॥ एक आधार छै मोह भणी । ल० । तुमरे हो आगम प्रतीत । मन मुझ मोहिया ॥ ल० ॥ अवर भरम सब छोरियो । ल० । धारी हो तुम आण पुनीत । एही जग जोहीया ॥ ल० ॥ ५ ॥ जुग प्रधान पुरुष तणी । ल० । रीति हो मुझ मन सुखदाय । देखी सुभ कारिणी ॥ ल० ॥ एही जिनमत रीत छे । ल० । मीत हो ओर सब ही विहाय । भव-सिंधु तारणी ॥ ल० ॥ ६ ॥ धन्य जनम तिस पुरुषका ॥ ल० ॥ धारी हो तुम आण अखंड । मन वच कायसुं ॥ ल० ॥ आतम अनुभव रस पीया ॥ ल० दीया हो तुम चरणमें मंड । चित्त हुलसायसुं ॥ ल० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ।

होरीकी चाल ॥

परम आनंद सुख दीजोजी । अभिनंदन यारा । अक्षय अभेद अछेदसरूपी । ज्ञान भान उजवारा । चिदानंद घन अंतरजामी । धामी रामी २ त्रिभुवन साराजी । अ० ॥ १ ॥ चार प्रकारना बंध निवारी । अजर अमर पद धारा । करम भरम सब छोर दीये हैं । पामी सामी २ परम करताराजी ॥ अ० ॥ २ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन सुख लीना । मेट मिथ्यात अंधारा । अमर अटल फुन अगुरु लघुको । धारा सारा २ अनंत बल भाराजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ बंध उदय विन निर्मल जोति । सत्ता करी सब छारा । निज स्वरूप त्रय रत्न विराजे । छाजे राजे २ आनंद [illegible] ॥ अ० ॥ ४ ॥ ज्ञान वीर्य मग्न

जीवत धारी । मदन भूत जिन गारा । त्रिभुवनमें जश गावत तेरा । जग स्वामी २ प्राण प्याराजी ॥ अ० ॥ ५ ॥ निज आतम गुणधारी प्रभुजी ॥ सकल जगत सुखकारा । आनंदचंद जिनेसर मेरा । तेरा चेरा २ हुं सुखकाराजी ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ नाथ कैसे गजके बंद छुडायो, ए देशी ॥

सुमति जिन तुम चरण चित्त दीनो । एतो जनम जनम दुख छीनो ॥ सु० ॥ आंकणी ॥ कुमति कुलट संग दूर निवारी । सुमति सुगुण रस भीनो । सुमतिनाथ जिन मंत्र सुण्यो है । मोह नींद भइ खीनो ॥ सु० ॥ १ ॥ करम परजंक बंक अति सिज्या । मोह मूढता दीनो । निज गुण भूल रच्यो परगुणमें, जनम मरण दुख लीनो ॥ सु० ॥ २ ॥ अब तुम नाम प्रभंजन प्रगटयो । मोह अभ्रछय कीनो । मूढ अज्ञान अविरती ए तो । मूल छीन भये तीनों ॥ सु० ॥ ३ ॥ मन चंचल अति भ्रामक मेरो । तुम गुण मकरंद पीनो । अवर देव सब दूर तजत है । सुमति गुपति चित्त दीनो ॥ सु० ॥ ४ ॥ मात तात तिरिया सुत भाई । तन धन तरुण नवीनो । ए सब मोह जालको माया । इन संग भयो है मलीनो ॥ सु० ॥ ५ ॥ दरसण ज्ञान चारित्र तीनो। निज गुण धन हर लीनो ॥ सुमति प्यारी भइ रखवारी विषय इंद्री भइ खीनो ॥ सुनो ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुमति सुमति रस सागर। आगर ज्ञान भरीनो । आतमरुप सुमति संग प्रगटे । शम दम दान

॥ श्री पद्मप्रभ जिन स्तवन ॥

॥ तपत हजारेनु गयो मैंनू छडके, ए देशी ॥

पद्मप्रभु मुझ प्यारांजी मन मोहनगारा । चंद चकोर मोर घन चाहे । पंकज रवि वन साराजी ॥ मन ॥१॥ त्यूं जिन मूर्ति मुझ मन प्यारी हिरदे आनंद अपाराजी ॥ मन ॥ २ ॥ अब क्यों देर करी मुझ स्वामी । भव दधि पार उताराजी ॥ मन ॥ ३ ॥ पंच विघन भय रति तुम जीती । अरति काम विडाराजी ॥मन॥ ॥ ४ ॥ हास सोग मिथ्या सब छारी । नींद अत्याग उखाराजी ॥ मन ॥ ५ ॥ राग द्वेष घीन मोह अज्ञाना । अष्टादश रोग गाराजी ॥ मन ॥ ६ ॥ तुम ही निरंजन भये अविनाशी । अब सेवककी वाराजी ॥ मन ॥ ७ ॥ हुं अनाथ तुम त्रिभुवन नाथा । वेग करो मुझ सारानी ॥ मन ॥ ८ ॥ तुम पूरण गुण प्रभुता छाजे । आतमराम आधाराजी ॥ मन ॥ ९ ॥

श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ।

॥ मंदिर पधारो मारा पूज जो ए देशी ॥

श्री सुपास मुझ वीनती । अब मानो दिन दयालजी । तरण तारण विरुद्ध छे भगत वच्छल किरपालजी । श्री सु० ॥ १ ॥ अक्षर भाग अनंतमें । चेतनता मुझ छोरजी । करम भरम छाया महा जिम । कीनो तम महा घोरजी । श्री सु० ॥ २ ॥ घन घटा छादीत रवि जिसो । तिसो रह्यो ज्ञान उजासजी । किरपा करो जो मुझ भणी थाये पूरण ब्रह्म प्रकासजी । श्री सु० ॥ ३ ॥ बिनही निमित्त न नीपजे । माटी

तनो घट जेम जी। तिम ही निमित्त जिनजी विना। ऊजल थाउं हूं केमजी। श्री सु० ॥ ४ ॥ त्रिकरण शुद्ध थावे यदा। तदा सम्यगदर्शण पामजी। दूजे त्रिक ब्रह्मज्ञान है। त्रिक मिटे शिवपुर ठामजी। श्री सु० ॥५॥ एही त्रिण त्रिक मुझ दीजीए लीजिये जस अपारजी। कीजीए भक्त सहायता। दीजीए अजर अमारजी ॥ श्री सु० ॥ ६ ॥ अब जिनवर मुझ दीजीए, आतम गुण भरपूरजी। कर्म० तिमिरके हरणकों, निर्मल गगन जूं सूरजी ॥ श्री सु० ॥ ७ ॥

॥ श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन ॥

॥ चाहत थी प्रभु सेवा वा करूंगी उलटी कर्म बनाईरी, ॥

चाह लगी जिन चंद्र प्रभुकी। मुझ मन सुमति ज्यूं आइरी। भरम मिथ्या मत दूर नस्यो है। जिन चरणां चित्त लाइ सखीरी ॥ चा० ॥ १ ॥ सम संवेग निरवेद लस्यो है। करुणारस सुखंदाइरी। जैन वैन अति नीके सगरे, ए भावना मन भाई स० ॥ चा० ॥ २ ॥ संका कंखा फल प्रति संसा कुगुरु संग छिटकाई री। परसंसा धर्महीन पुरुषकी इन भवमांही न कांइ स० ॥ चा० ॥ ३ ॥ दुग्ध सिंधु रस अमृत चाखी, स्यादवाद सुखदाइरी। जहर पान अब कौन करत है; दुरनय पंथ नसाइ स० ॥ चा० ॥ ४ ॥ जब लग पुरण तत्त्व न जाण्यो तब लग कुगुरु भुलाइरी। सप्तभंगी गर्भित तुम वांणी भव्यजीव सुखदाइ स० ॥ चा० ॥ ५ ॥ नाम रसायण सहुजग भांखे,

मर्म न जाने कांइरी। जिन वाणी रस कनक करणको, मिथ्या लोह गमाइ स० ।। चा० ।। ६ ।। चंद किरण जस उज्वल तेरो, निर्मल जोत सवाइरी। जिन सेव्यो निज आतम रूपी, अवर न कोई सहाई स० ।। चा० ।। ७ ।।

।। श्री सुविधि नाथ जिनस्तवन ।।

सुविधि जिन बंदना, पाप निकंदना, जगत आनंदना मुक्ति दाता। करम दल खंडना, मदन विहंडना, धरम धुर मंडना, जगत त्राता ।। अवर सहु वासना, छोर मन आसना, तेरी उपासना, रंग राता। करो मुझ पालना, मान मद गालना, जगत उजालना देह साता ।। सु० ।। १ ।। विविध किरियाकरी, मूढता मन धरी एक पक्षे लरी, जगत भूल्यो। मान मद मन धरी एक पक्षे लरी, जगत भूल्यो। मान मद मन धरी, सुमति सब पर हरी, जैन मुनि भेष धर मूढ फूल्यो। एही एकंतता, अति ही दुरदंतता, नास कर संततां, दुःख झूल्यो। संगसिद्धि कही, ज्ञान किरया वही, दूध साकर मिली रस घोल्यो ।। सु० ।। २ ।। बिना सरधानके ज्ञान नहीं होत है, ज्ञान विन त्याग नहीं होत साचो। त्याग विन करमको नास नहीं होत है, करम नासे विना धरम काचो ।। तत्त्व सरधान पंचंगी संमत कह्यो, स्यादवादे करी वैन साचो ।। मूल निर्युक्ति अति भाष्य चूरण भलो, वृत्ति मानो जिन धर्म राचो ।। सु० ।। ३ ।। उत्सर्ग अपवाद, अपवाद उत्सर्ग, उत्सर्ग अपवाद मन धारलीजो। अति उत्सर्ग उत्सर्ग है जैनमें, अति अपवाद अपवाद कीजो। एषड भंग

है जैन वाणी तने, सुगुरु प्रसाद रस घुंट पीजो। जब लग बोध नहीं, तत्त्व सरधानका, तबलग ज्ञान तुमको न लीजो ॥ सु०॥४॥ समय सिद्धांतना अंग साचा सबी सुगुरु प्रसादथी पार पावे। दर्शन ज्ञान चारित करी संयुता, दाह कर कर्मको मोख जावे। जैन पंचंगीकी रीति भांजी सबी, कुगुरु तरंग मन रंग लावे। ते तरा ज्ञानको अंस नहीं ऊपनो, हार नरदेह संसार धावे ॥सु०॥५॥ तत्त्व सरधान विन सर्व करणी करी, वार अनंत तुं रह्यो रीतो। पुण्य फल स्वर्गमें भोग उंधो गिर्यो, तिर्यग् औतार बहुवार कीतो। ऊंटका मेगणा खांड लागी जिसो, अंतमें स्वादसे भयो फीको। चार गत वास बहु दुख नाना भरे, भयो महामूढ सिर मोर टीको।सु०।६। सुविधि जिनंदकी आन अवधार ले, कुमत कुपंथ सब दूर टारो। पक्ष कदाग्रह मूल नहीं तानियो, जानियो जैन मत सुध सारो। महा संसार सागर थकी निकली, करत आनंद निजरूप धारो। सुकल अरु धरम दोउ ध्यानको साध ले, आतमारूप अकलंक प्यारो ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन ॥

॥ वणजारेकी देशी ॥

शीतल जिनरायारे, त्रिभुवन पूरणचंद शीतलचंदन सारीसो जिनरायारे ॥ जिन ॥ मुझ मन कमल दिनंद ज्यों लोहने पारसो ॥ जिन ॥ १ ॥ जि० और न दाता कोय अभय अखेद अभेदनो ॥जिन॥ जि०सगरे देव निहार कौन हरे मुझकेदनो ॥ जिन ॥२॥ जि० गर्भवास दुःख पूर कलमल संयुत थानमें जिन। जि० पित्त

सलेषम पूर दुःखभरे बहु जानमें ॥ जिन ॥ ३ ॥ जिन जनमत दुख अपार मोह दशा महा फंदमें ॥ जिन ॥ जि० अब मनमांहि विकार कीट फंस्यो जैसे गंदमें ॥ जिन ॥ ४ ॥ जिन परवश दीन अनाथ मुझ करुणा चित आनिये जिन। जि० तारो जिनवर देव वीनतडी चित्त ठानिये ॥ जिन ॥ ५ ॥ जि० करुणा सिंधु तुम नाम अब मोहि पार उतारिये ॥ जिन ॥ जि० अपणा विरुद निबाह अवगुण गुण न विचारिये ॥ जिन ॥ ६ ॥ जिन शीतल जिनवर नाम शीतल सेवक कीजियें। जिन। जि० शीतल आतमरूप शीतल भाव धरीजिये ॥ जिन ॥ ७ ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथ जिन स्तवन ॥

॥ पीलेरे प्याला होय मतवाला, ए देशी ॥

श्रीं श्रेयांस जिन अंतर जामी। जग विस-रामी त्रिभुवन चंदा। श्री श्रे० कल्पतरु मन वांछित दाता। चित्रावेल चिंतामणी श्राता। मन वांछित पूरें सब आसा। संत उधारण त्रिभुवन त्राता। श्री श्रे० ॥ १ ॥ कोइ विरंचीं ईस मन ध्यावे। गोविंद विष्णु उमापती गावे। कार्तिक साम मदन जस लीनां। कमला भवानी भगति रस भीना। श्री श्रे० ॥ २ ॥ एही त्रीदेव देव अरू देवी श्री श्रेयांस जिन नाम रटंदा। एक ही सुरज जग परगासे। तारप्रभा तिहां कौन गणंदा। श्री श्रे० ॥ ३ ॥ ऐरावण सरीसो गज छांडी लंबकरण मन चाह करंदा। जिन छांडीं मन अवर देवता। मूढमति मन भाव धरंदा। श्री श्रे० ॥ ४ ॥ कोइ त्रिशुली चक्री फुन कोइ भामनीके संग नाच करंदा। शांतरूप तुम मूरति

नीकी । देखत मुझ तन मन हुऊसंदा । श्री श्रे० ॥ ५ ॥ चार अवस्था तुम तन सोभे । बाल तरुण मुनि मोक्ष सोहंदा । मोद. हर्ष तन ध्यान प्रदाता । मूढमती नहीं भेद लहंदा । श्री श्रे० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान राज जिन पायो । दुर भयो निरधन दुख धंदा । समता सागरके विसरामी । पायो अनुभव ज्ञानं अमंदा ॥ श्री श्रे० ॥ ७ ॥

॥ श्री वासुपुज्य जिन स्तवन ॥

॥ अडलकी चाल ॥

वासुपूज्य जिनराज आज मुज तारीये । करम कठण दुख देतके वेग निवारीये । वीतराग जगदीश नाथ त्रिभुवन तिलो । महा गोप निर्याम धाम सब गुण निलो ॥ १ ॥ काल सुभाव मिलान करम अति तीसरो । होनहार जिय सक्ति पंच मीली बीसरो । एक अंस मिथ्यात वात ए सांभली । कीये मदिरा आंख भइ धामली ॥ २ ॥ पंचम काल विहाल नाथ हुं आइयो । मिथ्या मत बहु जोर घोर अति छाइयो । कलह कदाग्रह सोर कुगुरु बहु छाइयो । जिनवाणी रस स्वादके विरले पाइयो । तुझ किरपा भई नाथ एक मुझ भावना । जिन आज्ञा परमाण और नहीं गावना । पक्षपात नहीं लेस द्वेष किनसूं करूं । एही स्वभाव जिनंद सदा मनमें धरूं ॥ ४ ॥ किंचित पुन्य प्रभाव प्रगट मुझ देखीये । जिन आणायुत भक्ति सदा मन लेखिये । होनहार सुभ पाय मिथ्या मत छांडीये । सार सिद्धांत प्रमाण करण मन मांडीये ॥ ५ ॥ एक अरज मुझ धार दयाल जिनेसरू । उद्यम प्रबल अपार

दीयो जग ईसरु । तुझ विन कौन आधार भवोदधी तारणे । विरुद्र निवाहो राज करम दल वारणे ॥ ६ ॥ आतम रूप भुलाय रम्यो पर रूपमें । पर्यो हुं काल अनादि भवोदधि कूपमें । अव काढो गही हाथ नाथ मुझ वारीया । पाउं परमानंद करम जर झारीया ॥ ७ ॥

॥ श्री विमलनाथ जिन स्तवन ॥

॥ सुंदर चेत वहार सार पाल सरफूले ए देशी ॥

विमल सुहंकर नाथ आस अव हमरी पूरो । रोग सोग भय त्रास आस ममता सव चूरो । दीजो निरभय थान खान अजरामर चंगी । जनम जनम जिनराज ताज वहु भगत सुरंगी ॥ १ ॥ मात तात सुत भ्रात जान वहु सजन सुहाये । कनक रतन वहु भूर कूर मन फंद लगाये । रंभा रमण अनंग वहु केल कराये । संध्या रंग विरंग देख छिनमें विरलाये ॥ २ ॥ पदम राग सम चरण करण अति सोहेनीके । तरुण अरुण सित नयन वयण अमृत रस नीके । वदन चंद ज्यूं सोम मदन सुख मानेजीके । तुझ भक्ति विन नाथ रंग पतंग जूं फीके ॥ ३ ॥ गज वर तरल तुरंग रंग वहु भेद विराजे । कंकण हार किरीट करण कुंडल अति साजे । राग रंग सुख चंग भोग मननीके भायो । तुझ भक्ति वीन नाथ जान तिन जनम गमायो ॥ ४ ॥ रतन जरत विमान भान जूं भये सनूरे । रंभा रमण आनंद कंद सुख पाये पूरे । षोडस नित्य सिंगार नाच स्थिति सागर पूरे । जिन भक्ति फल पाये मोक्ष तिन नाही दुरे ॥ ५ ॥ धन धन तिन अवतार धार जिन भक्ति सुहानी । दया दान तप

नेम सील गुण मनसा ठानी जिनवर जसमें लीन पीन प्रभू अर्च करानी । तुझ किरपा भई नाथ आज हुं भक्ति पिछानी ॥ ६ ॥ जग तारक जगदीस काज अब कीजो मेरो । अवर न सरण आधार नाथ हुं चेरो तेरो । दीन हीन अब देख करो प्रभु वेग सहाइ. चातक ज्यूं घनघोर सोर निज आतम लाई ॥ ७ ॥

॥ श्री अनन्तनाथ जिन स्तवन ॥

॥ नीद्लडी वैरन हो रही, ए देशी ॥

अनंत जिनंदसुं प्रीतडी । नीकी लागी हो अमृतरस जेम । अवर सरागी देवनी । विष सरखी हो सेवा करूं केम ॥अ०॥१॥ जिम पदमनी मन पिउ वसे । निर्धनीया हो मन धनकी प्रीत । मधूकर केतकी मन वसे । जिम साजन हो विरही जन चीत ॥ अ० ॥ २ ॥ करसण मेघ आषाड ज्यूं। निज वाछड हो सुरभी जिम प्रेम साहिब अनंत जिनंदसुं । मुझ लागी हो भक्ति मन नेम ॥ अ० ॥ ३ ॥ प्रीति अनादिनी दुख भरी । में कीधी हो पर पुदगल संग । जगत भम्यो तिन प्रीतसू । संग धारी हो नाच्यो नव नव रंग ॥ अ० ॥ ४ ॥ जिसकों आपणा जानीयो तिन दीधा हो छिनमें अति छेह । परजन केरी प्रीतडी । में दखी हो अंते निसनेह ॥ अ० ॥ ५ ॥ मेरो कोई न जगतमें । तुम छोडी हो जगमें जगदीस । प्रीत करूं अब कोनसू । तूं त्राता हो मोने विसवा वीस ॥ अ० ॥ ६ ॥ आतमराम तूं माहरो । सिर सेहरो हो हिअडेनो हार । दीन दयाल किरपा करो । मुझ वेगा हो अब पार उतारो ॥ अ० ॥ ७ ॥

॥ श्री धरमनाथ जिन स्तवन ॥

॥ मालाकिहां छैरे, ए देशी ॥

भावक जन वंदोरे धरम जिनेसर धरम स्वरूपी । जिनंद मोरा । परम धरम परगासैरे । पर दुख भंजन भवि मन रंजन ॥ जि० ॥ द्वादस परषदा पासेरे । भविक जन बंदोरे । धरम जिनेसर वंदो परम सुख कंदोरे ॥ भ० ॥ १ ॥ धरम धरम सहु जन मुख भाषै ॥ जि० ॥ मरम न जाने कोई रे । धरम जिंनद सरण जिन लीना जि० ॥ धरम पिछाणे सोई रे ॥भ०॥२॥ दखभाव स्वदया मन आणो ॥जि०॥ पर सरूप अनु बंधोरे व्यवहारी निहचै गिन लीजो ॥ जि० ॥ पालो करम न बंधोरे ॥ म ॥ ३ ॥ जयना सर्व काममें करणी ॥जि०॥ धरम देसना दीजेरे । जिन पूजा यात्रा जगतरणी ॥जि०॥ अंतःकरण शुद्ध लीजेरे ॥भ०॥४॥ षट काया रक्षा दिल ठानी ॥ जि० निज आतम समझानीरे । पुदगलीक सुख कारज करणी ॥जि०॥ सरूप दया कही ज्ञानीरे ॥भ०॥५॥ करि आडंवर जिन मुनि वंदे ॥ जि० ॥ करी प्रभावना मंडेरे । विन करुणा करुणा फल भागी। जन्म मरण दुख छंडेरे ॥भ०॥६॥ विधि मारग जयणा करी पाले ॥ जि० ॥ अधिक हीन नही कीजेरे । आतम राम आनंद घन पायो ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान लहीजेरे ॥ भ० ॥ ७ ॥

॥ शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ भविक जन नित्य ये गिरि वंदो, ए देशी ॥

भविक जन शांति हे जिन वंदो भव भवनां पाप निकंदो

भविक जन शांति है जिन वंदो ॥ १ ॥ पूरव भव शांति करीनो। कापोत पाल सुख लीनो करुणा रस सुध मन भीनो। ते तो अभयदान बहु दीनो ॥ भ० ॥२॥ अचिरानंदन सुखदाई। जिन गर्भे शांति कराई। सुरनर मिल मंगल गाई। कुरु मंडन २ मारि नसाई ॥भ०॥३॥ जग त्याग दान बहु दीना। पामर कमलापति कीना। सुद्ध पंच महाव्रत लीना। पाया केवलज्ञान अईना ॥ ४ ॥ जग शांतिके धरम प्रगासे। भव भवनां अघ सहु नासे। सुद्ध ज्ञान कला घट भासे। तुम नाम अरे २ परम सुख पासे ॥ भ० ॥५॥ तुम नाम शांति सुख दाता। तुं मात तात मुझ भ्राता। मुझ तप्त हरो गुण ज्ञाता। तुम शांतिक अरे २ जगत विधाता ॥भ०॥६॥ तुम नामे नवनिध लहिये। तुम चरण शरण गहि रहिये। तुम अर्चन तन मन वहिये। एही शांतिक अरे २ भावना कहिये ॥ भवि० ॥ ७ ॥ हुं तो जनम मरण दुःख दहियो। अब शांति सुधार रस लहियो। एक आतम कमल उमहियो। जिन शांति अरे २ चरण कज गहियो ॥ भवि० ॥ ८ ॥

॥ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन ॥

॥ भावनाकी देशी ॥

कुंथु जिनेसर साहिब तुं धणीरे। जगजीवन जगदेव। जगत उधारण शिव सुख कारणेरे। निसदिन सारो सेव ॥कु०॥१॥ हुं अपराधी काल अनादिनोरे। कुटल कुबोध अनीत लोभ क्रोध मद मोह माचीयोरे। मछर मगन अतीत ॥ कु० ॥ २ ॥ लंपट [illegible] ॥ पर वंचक [illegible] चोर। आघापक पर

निंदक मानीयोरे। कलह कदाग्रह घोर ॥ कु० ॥ ३ ॥ इत्यादिक अवगुण कहुं केतलारे । तुम सब जानन हार। जो मुझ वीतक वीत्यों वीतसेरे । तुं जाने करतार ॥ कु० ॥ ४ ॥ जो जगपूरण वैद्य कहाइयोरे। रोग करे सब दूर । तिनही अपणा रोग दिखाइयेरे तो होवे चिंताचूर ॥ कु० ॥ ५ ॥ तुं मुझ साहिब वैद्य धनंतरीरे। कर्म रोग मोह काट। रतनत्रयी पथ मुझ मन मानीयोरे। दीजो सुखनो थाट ॥ कु० ॥ ६ ॥ निर्गुण लोह कनक पारस करेरे। मांगे नही कुछ तेह। जो मुझ आतम संपद निर्मलीरे। दास भणी अब देह ॥ कु० ॥ ७ ॥

श्री अरनाथ जिन स्तवन ।

॥ चंद्रप्रभु मुखचंद्र सखी मोने देखण दे, ए देशी ॥

अरे जिनेश्वर चंद सखी मोने देखण दे। गत कलिमल दुख दंद। स०। त्रिभुवन नयनानंद। स०। मोह तिमर भयो मंद ॥ स० ॥ १ ॥ उदर त्रिलोक असंखमें। स०। महरिद नीर निवास। स०। कठन मिथ्याल अछा दियो। स०। करम पडल अठ तास ॥ स० ॥ २ ॥ आदि अंत नही कुंडनी। स०। अति ही अज्ञान अंधेर। स०। स्वजन कुटुंबे मोहियो। स०। वीत्यो सांझ सवेर ॥ स० ॥ ३ ॥ ख्यय उपसम संयोगथी। स०। करम पलट भयो दूर। स०। उरध मुखी पुन्ये करयो। स०। स्वजन संग करयो चूर ॥ स० ॥ ४ ॥ पहुतो जिनवर आसना। स०। दीठो आनंद पूर दीनदयाल कृपा करी। स०। राखो चरण

शिरपर छत्र फिरावेजी ॥जि०॥२॥ हिंसक जन हिंसा तजी पूजे, चरणे सीस नमावे, तू ब्रह्मा तूं हरि शिवंकर, अवर देव नहीं भावेजी ॥ जी० ॥३॥ करुणा रसभरे नयन कचोरे, अमृत रस बरसावे, वदन चंद चकोर ज्युं निरखी, तन मन अति उलसावेजी ॥ जि० ॥४॥ आतम राजा त्रिभुवन ताजा, चिदानंद मन भावे, मल्लि जिनेसर मनहर स्वामी, तेरा दरस सुहावेजी ॥ जि० ॥५॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

॥ प्रेमला परणी, एदेशी ॥

श्री मुनिसुव्रत हरिकुल चन्दा। दुरनय पंथनसायो। स्याद्वाद रस गर्भित वानी। तत्त्व स्वरूप जनायो। सुन ग्यानी जिन वाणी रस पीजो अतिसन्मानी ॥ १ ॥ बंध मोक्ष एकांते मानी, मोक्ष जगत उछेदे। उभय नयात्म भेद गहीने, तत्त्व पदार्थ वेदे। सुन ग्या० ॥ २ ॥ नित्य अनित्य एकांत गहीने। अर्थ क्रिया सब नासे। उभय स्वरूपे वस्तु विराजे। स्याद्वाद इम भासे। सुन ग्या० ॥ ३ ॥ करता भुगता वाहिज दृष्टे। एकांते नहिं थावे निश्चय सुद्ध नयात्म रूपे। कुण करता भुगतावे। सु० ॥ ४ ॥ रूप विना भयो रूप सरूपी। एक नयात्म संगी। तम व्यापी विभु एक अनेका। आनंदघन सुख रंगी। सु० ॥ ५ ॥ शुद्ध अशुद्ध नाश अविनासी निरंजन निराकारो। स्यादवाद मत सगरो नीको दुरनय पंथ निवारो। सु० ॥ ६ ॥ सप्तभंगी मत दायक जिनजी। एक अनुग्रह कीजो, आतमरूप जिसो तुम लाधो। सो सेवकको दीजो ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ श्री नमिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ आ मिलवे वंशीवाला—कान्हा, ए देशी ॥

तारोजी मेरे जिनवर सांइ बांह पकड़ कर मोरी । कुगुरु कु पंथ फंदथी निकसी, सरण गही अब तोरी ॥ ता० ॥ १ ॥ नित्य अनादि निगोदमें रुलतां, झुलतां भवोदधि मांही । पृथ्वी अप तेउ वात स्वरूपी, हरित काय दुख पाइ । ता० ॥ २ ॥ बिति चउरिंद्री जाति भयानक, संख्या दुखकी न कांई । हीन दीन भयो परवस परके, ऐसे जनम गमाइ ता० ॥ ३ ॥ मनुज अनारज कुलमें उपनो, तोरी खबर न कांइ । ज्यूं त्यूं कर प्रभु मग अब पराम्यो, अब क्यों वेर लगाइ । ता० ॥ ४ ॥ तुम गुण कमल भ्रमर मन मेरो, उडत नहीं है उडाइ तृपत मनुज अमृतरस चाखी, रुचमें तप बुझाई । ता० ॥ ५ ॥ भवसागरकी पीर हरो सब, मेहर करो जिनराइ । द्दग करुणाकी मोइ पर कीजो, लीजो चरण छुपाई तां० ॥ ६ ॥ विप्रानंदन जगदुखकंदन, भगत वछल सुख दाइ । आतम राम रमण जगस्वामी कामित फल वरदाई । ता० ॥ ७ ॥
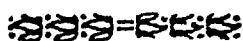
॥ श्री नेमिनाथ जिन स्तवन । ॥

॥ राग विहाग ॥

वारक है शिवादेवीके नंदन करम कठिन दुखदाइ री । मार धार अघ दुर करी हे स्यामरूप दरसाइ सखीरी ॥ वा० ॥ १ ॥ मदन कदन शिव सदनके दाता, हरण करन दुखदाइ री ॥ करम भरम जग तिमिर हरनको, अजर अमर पद पाइ सखीरी ॥ वा० ॥ २ ॥ नरपति वदन ... अनंदन समन चार छितराइरी ॥

अमम अमम जिनरूप सरीसो जिनवर पद उपजाइ सखीरी ॥ ॥ वा० ॥ ३ ॥ राजिमती निज वनीता तारी नव भव प्रीति निभाइरी । हलधर रथकर मृग तुम नामे, ब्रह्म लोक सुर थाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ४ ॥ गजसुकुमाल लाल तुम तार्यो, भवजल सगरे जराइरी ॥ ए उपगार गिनु जगकेता, करुणासिंधु सहाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ५ ॥ पिण निज कुटुंब उद्धार नाथजी, तारक विरूद धराइरी ॥ ए गुण अवर नरनमें राजे, इनमें कांइ बड़ाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ६ ॥ रेवताचल मंडन दुख खंडन, म्हेर करो जिनराइरी ॥ मुझ घट आनंद मंगल करतो हुं पिण आतमराइ सखीरी ॥ वा० ॥ ७ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

॥ राग बढंस ॥

मूरति पास जिनंदकी सोहनी मोहनी जगत उधारण हारी । मू० । आंकणी । नील कमल दल तन प्रभु राजे साजे त्रिभुवन जन सुखकारी । मोह अज्ञान मान सब दलनी मिथ्या मदन महा अघ जारी ॥ मू० ॥ १ ॥ हुं अतिहीन दीन जगवासी, माया मगन भयो सुद्ध बुद्ध हारी । तो विन कौन करे मुझ करुणा, वेगालो अब खबर हमारी ॥ मू० ॥ २ ॥ तुम दरसन विन बहु दुख पायो, खाये कनक जैसे चरी मतवारी । कुगुरू कुसंग रंगवस उरझ्यो, जानि नहीं तुम भगती प्यारी ॥ मू० ॥ ३ ॥ आदि अंत विन जग भरमायो । गायो कुदेव कुपंथ निहारी ।

मू० ॥ ४ ॥ कौन उद्धार करे मुझ केरो। श्री जिन विन सहु लोक मझारी। करम कलंक पंक सब जारे। जोजन गावत भगति तिहारी। मू० ॥ ५ ॥ जैसे चंद चकोरन नेहा मधुकर केतकी दल अन प्यारी। जनम जनम प्रभु पास जिनेसर वसो मन मेरे भगति तिहारी। मू० ॥ ६ ॥ अश्वसेन वामाके नंदन चंदन सम प्रभु ताप बुझारी। निज आतम अनुभव रस दीजो। कीजो पलकमें तनु संसारी। मू० ॥ ७ ॥

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

॥ राग भोपाली ताल दीपचंदी ॥

इतनुं मागुंरे देवा इतनुं मागुंरे, भव भव चरण शरण तुम केरो ॥ इतनुं० ॥ आंचली ॥ सिधारथ नृप नंदन केरो, त्रिशला माता आनंद वधेरो। ज्ञातनंदन प्रभु त्रिभुवन मोहे, सोहे हरित भव फेरोरे ॥ इतनुं० ॥ १ ॥ दीनदयाल करुणानिधि स्वामी वर्धमान महावीर भलेरो ॥ श्रमण सुहंकर दुःख हर नामी। आर्य-पुत्र भ्रम भूत दलेरो ॥ इतनुं० ॥ २ ॥ तेरेहि नामसे हुं मदमातो, स्मरण करत आनंद भरेरो। तेरे भरोसे ही भीति नीवारी, आनंद मंगल तुमही खरेरो ॥ इतनुं० ॥ ३ ॥ पूरण पुण्य उदय करी पामी, शासन तुमरो नाश अंधेरो। जयो जगदीश्वर वीर जिनेश्वर, तुं मुज ईश्वर हुं तुम चेरो ॥ इतनुं० ॥ ४ ॥ आतमराम आणंद रस पूरण, मूरण करम कलंक ठगेरो। शासन तेरो जग जयवंतो सेवक वंदित निशदिन तेरो ॥ इतनुं० ॥ ५ ॥

(श्री रूषभदेवजीकी थुइ)

प्रह उठि वंदू ऋषभदेव गुणवंत, प्रभु बैठा सोहे समवसरण भगवंत, त्रण छत्र विराजे चामर ढारे इन्द्र, जिनना गुण गावे सुर नरनारीना वृंद ॥ इति ॥

(श्री सिद्धाचलजीकी थुइ)

पुंडरगिरि महिमा, आगममां परसिद्ध । विमलाचल भेटी, लइये अविचलरिद्ध । पंचमगति पहुंता, मुनिवर कोड़ा कोड़ । इण तीरथ आवी, कर्मविपातक छोड़ ॥ इति ॥

(श्री अष्टापदादि तीर्थोंकी थुइ)

अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरी वरू,
वासुपूज्य चंपानयर सिद्धा, नेम रेवागिरि वरू,
समेतशिखरे वीस जिनवर, मोक्ष पोंहोच्या मुनि वरूं,
चोवीश जिनवर नित्य वंदू, सयल संघ सुहं करूं ॥१॥ इति

(श्री पार्श्वनाथजीकी थुइ)

पास जिणंदा वामानंदा, जब गरभे फली,
सुपना देखे अर्थ विपेखे, कहे मघवा मली,
जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये,
नेमिराजी चित्तविराजी, विलोकित व्रत लीए ॥१॥ इति ॥

(श्री सिमंधर स्वामीकी थुइ)

सीमंधर जिनवर सुखकर साहेब देव,
अरिहन्त सकलनी भाव धरी करूं सेव,
सकलागम पारग गणधर भाषित वाणी,
जयवन्ति आणा ज्ञानविमल गुण खाणी ॥१॥

॥ सामायकके ३२ दूषणोंकी सज्झाय ॥

चोपाइ

॥ शुभ गुरु चरणे नामी शीश॥ सामायिकना दोष बत्रीश ; कहिशुं त्यां मनना दश दोष ॥ दुश्मन देखी धरतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक अविवेके करे ॥ अर्थ विचार न हृदये धरे ॥ मन उद्वेग वांछे यश घणो ॥ न करे विनय वडेरों तणो ॥ २ ॥ भय आंणे चिन्ते व्यापार ॥ फल संशयनी आणुंसार ॥ हवे वचनना दोष विचार ॥ कुवचन बोले करे हुंकार ॥ ३ ॥ ले कुंची जा घर उघाड़ ॥ मुखलवरी करतो बढवाड़ ॥ आवो जावो बोले गाल ॥ मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अपार ॥ ऐं दश दोष वचनना वार । काया केरां दुषणबार ॥ चपलासन जोवे दिशिचार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे संघात ॥ आलस्य मोडे ऊंचे हाथ ॥ पग लम्बे बैसे अविनीत ॥ उठिंगन ल्ये थम्भो भींत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खुणाय ॥ पग उपर चढावे पांव ॥ अति उघाडुं मेले अंग ॥ ढांके वलि तेम अंग उपांग ॥७॥ निद्राये रस फल निर्गमे ॥ करहा कंटक तरुयें भमे ॥ ऐं बत्रीशे दोष निवार ॥ सामायिक कर जो नरनार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटाऊ

जली ॥ केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्री शुभवीर वचनपालती ॥ स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ षट्काय रक्षणकी सझाय ॥

॥ भगवत देवे देशनारे ॥ भव्य सुनो चितलाय ॥ मत मनमें शंका करोरे ॥जिनवाणी चित्त लाय॥ चतुरनर अर्थ विचारोरे॥ ज्ञानि यत्न करो षट् काय ॥टेक॥ पृथ्वी एक कणुंकणांमें ॥ जीव कह्या जिनराज। काय परेवा सम करे तो । जम्बुद्विप न माय।१। चतुर०॥ अप् एकज बिन्दूवामे ॥ जीव कह्या जिनराज ॥ भ्रमरा सम काया करे तो ॥ जम्बुद्वीप न माय ॥ २ ॥ चतुर० ॥ तेजस एक तडंगलामें ॥ जीवकह्या जिनराज ॥ सरसूं सम काया करे तो जम्बुद्वीप न माय ॥ ३ ॥ चतुर० ॥ वायु एक झबुकडामें जीव कह्या जिनराज ॥ खसखस समकाया करे तो जम्बूदीप न माय ॥ ४ ॥ चतुर० ॥ ज्ञानि भेद बतावियारे, वनस्पति दोय प्रकार। साधारण कन्दमूलमेंरे, जीव अनन्त विचार ॥ ५ ॥ चतुर० ॥ अपना सुत वेचे पितारे ॥ माता ज़हर पिलाय राजा दण्डेरेतनेतो ॥ एनो कोंन उपाय ॥ ६ ॥ चतुर० ॥ अमृतसे जीवन घटेतो ॥ सूर्यअंधेरो थाय ॥ बोलावो लूटे परोतो ॥ कोने पुकारण जाय ॥७॥ चतुर० ॥ चन्द्रसूं अग्नि जले तो ॥ जलमें लागेलाय ॥ समुद्र डुबोवे जहाजने तो ॥ छींको माखन खाय ॥ ८ ॥ चतुर० ॥ धरणि धसे पातालमें तो ॥ अधिकार लोपाय ॥ साधु होकर जीव हणे तो ॥ चवड़े भूलो जाय ॥ ९ ॥ चतुर० ॥ त्रस स्थावर रक्षा करे तो ॥ श्रावक साधु,

ज्झाय ॥ वाड भखे जिम काकड़ी तो ॥ साधु हणे पट्काय ॥ १० ॥ चतुर० ॥ आचाराङ्गजी सूत्र मेंरे ॥ आगम अर्थ विचार ॥ बहु सूत्र दृष्टान्त हेरे ॥ सकल कुशल गुन गाय ॥ ११ ॥ चतुर० ॥ पट्काय रक्षक स्वाध्याय समाप्तम् ॥

अथ श्रावक करणीकी सज्झाय।

॥ राग—चोपाई ॥

श्रावक तुं उठे परभात, चार घड़ीले पिछली रात, मनमां समरे श्री नवकार, जिम पामे भवसायर पार ॥ १ ॥ कौन देव कौन गुरूधर्म, कौन हमारा है कुलकर्म, कौन हमारा है व्यवसाय, ऐसा चींतवजे मनमांहि ॥ २ ॥ सामायिक लीजे मन शुद्ध, धर्मकी हीयमें धर बुद्ध, पडिक्कमणा कर रयणीतना, पातिक आलोवे आपणा ॥ ३ ॥ काया सकति करे पच्चक्खाण सूधी पाले जिनवर आण, भणजे गुणजे तवन सिज्झाय, जिम हुंती नीसतारा थाय ॥४॥ चितारे नित चौदे नियम, पाले दया जिवे तहासिम, देहरे जाय जुहारे देव, द्रव्य भावसे करजे सेव ॥ ५ ॥ पोसाले गुरू वंदन जाय, सुने वखान सदा चित लाय, निरदुषन सुझतो आहार, साधुने दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ स्वामी वच्छल कीजे घना, सगपन मोटा स्वामीतणा दुखिया हीना दीनने देख, करजे तास दया सुविशेख ॥ ७ ॥ घर अनुसारे दीजे दान, मोटासु मकर अभिमान, गुरू मुखे लीजे आखडी, धर्म न छोड़ो एके घड़ी ॥ ८ ॥ वारू शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिकानो परिहार, म

भरे कहेनी कूड़ी साख, कूडा जनशु कथन म भाख ॥ ९ ॥ अनंत काय कहिये बत्तीस, अभक्ष बावीसे विसवाविश, ते भक्षण करीजै किम, काचा कवलां फल मतजिम ॥ १० ॥ रात्रि भोजनका बहु दोष, जाणीने करीये संतोष, साजी साबू लोहने गुळी, मधु धावड़ी म वेचेवली ॥ ११ ॥ म करावे वली रंगण पास, दूषण घणा कह्या छे तास, पाणी गलजे बे वार, अणगल पीधां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवांणीका करीये जतन, पातक छोडी करीये पुन्न, छाणां इंधण चूल्हे जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृत पेरे वावरजे नीर, अणगल नीर म धोवे चीर, बारे व्रत शुद्ध पालजे, अतीचार सगलां टालजे ॥ १४ ॥ कहिया पनरे करमा दान, पापतणी परं हरजे खान, शीस मलेजे अनरथ दंड, मिथ्या मैलम भरिजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हीये राखजे, बोल विचारीने भाखजे, उत्तम ठामे खरचें वित्त, पर उपगार करे शुभ चित्त ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधने दही, उघाडा मत मेले सही, पांचे तिथि म करे आरंभ, पाले शील तजे मन दंभ ॥ १७ ॥ दिवश्चरिम कीजे चउ विहार, च्यारे आहारतणो परिहार, दिवसतणा आलो ये पाप, जिम भाजे सघला सताप ॥ १८ ॥ संध्या आवश्यक, साचवे, जिन चरण शरण भव भवे, च्यारे शरण दृढ करि होय, सागारी अणशण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, जाऊं तीर्थ शेत्रुंजे जेहवा, समेत शिखर आवु गिरनार, भेटीस कबहुं धन अवतार ॥ २० ॥ श्राव-ककी करनी है एह, एहथी होय भवनो छेह आठ कर्म पडे पातळां, पाप तणा छूटे आमळा ॥ २१ ॥ वारू ऊ ीये अमर विमान, अनुक्रम पावे

शिवपुर स्थान। कहै जिन हर्ष घणे ससनेह, करणी दुख हरणी है यह ॥ २२ ॥ इति

॥ सम्यक्त्वकी सझाय ॥

समकीत वीना शीव दूर, भव्य जनों तुम सांभलो, ईम जंपे जीनचंद, सूर भव्य जनों तुम सांभलो ईम समकीत घर थोडलो ॥ सर सर कमल न उपजे, वन वन चंदन न होय, घर घर सुपत न पाईये, जन जन पंडित न होय ॥ ईम समकीत घर थोडलो ॥ १ ॥ गीरिवर गीरिवर गज नही, पवल पवल प्रशाद, कुसम कुसम परीमल नही, फल फल मधुर न स्वाद ॥ ईम समकित घर थोडलो ॥ २ ॥ पुरुष सवे सुरा नही, सवन सुलक्षणी नार, क्षमावंत सव मुनि नहीं, सत्यवादी दो चार ॥ ईम समकित घर थोड़लो ॥ ३ ॥ समकित समकित जग भणे, भेद न जाणे कोय, जिस घट समकित उपजे, ते घट वीरला जोय ॥ ईम समकित घर थोड़लो ॥ ४ ॥ दान शीयल तप भावना, सुध समकित जोय, मुक्त सीहासन वेठना, निश्चय पावेजी सोय ईम समकित घर थोडलो ॥ ५ ॥ इति

(अथ आरती)

जे जे आरती आदि जिनंद्र, नाभिराय मरुदेवीके नंदा ॥ जे जे आरती० ॥ १ ॥ पेहेली आरती पूजा कीजे, नर भव पामी लावो लीजे ॥ जे जे आरती० ॥ २ ॥ दूसरी आरती दीन दयाल धुलेव मंडपमां जग अजवाला ॥ जे जे आरति० ॥ ३ ॥ तीसरी आरती त्रीभुवन देवा, सुरनर इंद्र करे थांरी सेवा ॥ जे जे

आरती० ॥ ४ ॥ चौथी आरती चउगति चूरे, मन वांछित फल शीव सुख पूरे ॥ जे जे आरती ॥ ५ ॥ पंचमी आरती पून्य उपायो, मुलचंद रिषभ गुण गायो ॥ जे० ॥ आ० ॥ ६ ॥ जो कोई आरती पढे पढावे सो नर नारी अमर पद पावे, ॥ ७ ॥ जे जे आरती० ॥ इति

(अथ आरती)

करूं जिन आरतियां सुरंगसें, करुं जिन आरतियां ॥

सकल मनोरथ सफल हुए मम, करूं जिन आरतियां ॥ अंचली ॥ रतन कनक मय थाल हिल्यावो, कर सुभ भारतियां ॥ सुरंगसे कर० ॥ आरति उतारी जिनवर आगे, अघ सब छारतियां । अघ० सु० स० ॥ १ ॥ सात चौद एक वीस वार करी, करम विदारतियां ॥ सुरंगसे करम० ॥ त्रिण त्रिण वार प्रदक्षिणा करीने, जनम कुतारतियां ॥ जनम० सु० स० ॥ २ ॥ जिम जिम जलधारा देई जंपे, कंपे भारतियां ॥ सुरंगसे कंपे० ॥ बहु भव संचित पाप पणासे, भववन जारतियां ॥ भव० सु० स० ॥ ३ ॥
द्रव्य पूजासें भाव सुहंकर, आतम तारतियां ॥ सुरंगसें आतम० ॥ जिनवर सम नही तीन भुवनमें, इम कहे आरतियां ॥ इम० सु० स० ॥ ४ ॥ इति ॥

(अथ मंगलदीपक)

राग—जोग

मंगल दीपक सारा रे, मनमोहन गारा ॥ मंगल० ॥ अंचलि ॥

भुवन प्रकासक जिन चिरनंदो, अष्टादश दोष जारारे ॥ मन० ॥ १ ॥
चंद्रसूर्य तुम मुखना लंछण, फिरता करे नित्य वारारे ॥ मन० ॥ २ ॥
इंद्राणी मंगल दीपक कर, भ्रमरी दीये रंग भारारे ॥ मन० ॥ ३ ॥
जिम जिम धूप घटी अति दहके, तिमतिम पाप जरारे ॥ मन० ॥ ४ ॥
उदका क्षत कुसुमांजलि चंदन, धूप दीपफल सारारे ॥ मन० ॥ ५ ॥
नैवद्य वंदन जिनवर आगे, करो निज आत्म प्यारारे ॥ मन० ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

(अथ मंगल दीपक)

दीवोरे दीवो मंगलीक दीवो, आरती उतारोने बहु चिरजीवो, सोहामणो घेर परव दीवाली, अमर खेले अबला नारी, दीपाल भणे एने करे अजुआली, भावे भगते विघन निवारी, दीपाल भणे जेने ए कली काले, आरती उतारी राजा कुमारपाले, तमघर मंगलीक, अम घर मंगलीक मंगलीक चतुर विध संघने होजो, दीवोरे दीवो मंगलीक दीवो, आरती उतारोने बहु चिरजीवो ॥ इति ॥

अथ गहूंली ।

॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करीये ए देशी ॥

॥ सखी सरस्वती भगवती मातारे, कांइ प्रणमीजे सुख शातारे, कांइ वचन सुधारस दाता, गुणवंता सांभलो वीर वाणीरे, कोइ मोक्ष तणी निसाणी ॥ गुण० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कांइ चोवीशमा जिनरायारे, साथे चौद सहस मुनिरायारे, जेहना सेवे सुर नर पाया ॥ गुण० कां० ॥ २ ॥ सखी चतुरंग फोजा साथरे,

सखी आव्या श्रेणिक नरनाथरे, प्रभु वंदीने हुआ सनाथ ॥ गुण० ॥ कां० ॥ ३ ॥ बहु सखि संयुत रार्णीरे, आवी चेलणा गुण खाणीरे, एतो भामंडलमां उजाणी ॥ गुण० ॥ कां० ॥ ४ ॥ करे साथीयो मोहन वेलरे, कांइ प्रभुने वधावे रंग रेलरे, कांइ धोवा कर्मना मेल ॥ गुण ॥ कां० ॥ ५ ॥ बारे पर्षदा निसुणे वाणीरे, कांइ अमृतरस समजाणीरे, कांइ वरवा मुक्ति पटराणी ॥ गुण० ॥ कां० ॥ ६ ॥

(श्री गौतमस्वामीकी गहुंली)

॥ प्रथम जिनेश्वर मरुदेवी नंदा, ए देशी ॥

गौतमस्वामी शिवसुखकामी, गुण गाउं सीरनामीरे । गुरू गौतमस्वामी ॥ ए आंकणी ॥ जीव सत्ताका संशय पडिया, वीर चरण जइ अडियारे ॥ गु० ॥ १ ॥ हुवा गणधारी शंका निवारी प्रभुजीये त्रिपदी आलीरे ॥ गु० ॥ २ ॥ चौद पूरवकी रचना कीनी, जग जश कीरती लीनीरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ लब्धि बलिया अष्टापद चडिया, वीर वचन रस भरियारे ॥ गु० ॥ ४ ॥ गुरूजी जात्रा करके वलिया, पन्नरसें तापस मलियारे ॥ गुरू ॥ ॥ ५ ॥ संजम लेवा विनती कीनी, गुरूजीयें दिक्षा दीनीरे ॥ गु० ॥ ६ ॥ वीर प्रभुका दरिशण चलिया, केवल लक्ष्मी वरियारे ॥ गु० ॥ ७ ॥ एम अनेक शिष्यकुं तारी. ए गुरूकी बलिहारीरे ॥ गु० ॥ ८ ॥ सखियां सघली गहुंली गावे, गौतम स्वामीकी भावेरे ॥ गु० ॥ ९ ॥ वीर प्रभुका राग निवारी, आतम एकता धारीरे ॥ गु० ॥ १० ॥ केवल पाइ मोक्ष पद पाया, पृथ्वीमाताका जायारे

॥ गु० ॥ ११ ॥ ओगणिसे सड़सठ संवत् पाया, दीवाली दिन आयारे ॥ गु० ॥ १२ ॥ वीर विजय गौतम गुण गाया, बीकानेर जब आयारे ॥ गु० ॥ १३ ॥ इति ॥

गहुंली ।

॥ ऋतु बत्र जोग लीयारे, ए देशी ॥

विनयानंद सूरिरायानारे । केतां करूरे वखाण । गुरूजीये ज्ञान दियोरे । भव्य जीव प्रतिबोधवारे । मानु उग्यो भाण अंध तम दूर कीयोरे ॥ गुरू० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पालतारे मालता निजगुण माहिं ॥ गु० ॥ पर पदारथ जालमारे । गुरूजी पेखता नाहिं ॥ गु० ॥ २ ॥ अध्यातम रस झीलतारे । पीलता पाप कंद ॥ गु० ॥ अनुभव ज्ञानथी जाणतारे । मोह दशा महाफंद ॥ गु० ॥ ३ ॥ अशुभ योग निवारतारे । करता करम निकंद ॥ गु० ॥ स्वपर सत्ता भजतारे । चैतन्य जडनो संग ॥ गु० ॥ ४ ॥ वस्तु स्वभाव निहालतारे । एक अनेकनो रंग ॥ गु० ॥ नित्यानित्य विचारतारे । भेदा भेदनो भंग ॥ गु० ॥ ५ ॥ तत्वा तत्वने खोजतारे । खेलता निजसुख चंग ॥ गु० ॥ ज्ञान क्रिया रस झीलतारे । मनमें धरीय उमंग ॥ गु० ॥ ६ ॥ करी उपगार भूमंडलेरे । लीधो लाभ अभंग ॥ गु० ॥ आपतर्या पर तारिनेरे । स्वर्गी थया सुख कंद ॥ गु० ॥ ७ ॥ पुन्य संयोगे पामीयेरे । एहवा गुरूनो संग ॥ गु० ॥ वीरविजय कहे गुरू तणोरे । रहे जो अविचल रंग ॥ गु० ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ दिनके पच्चक्खाण ॥

(नमुकारसहि मुट्ठिसहिका)

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। चउव्वि-हंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे।

(पोरिसि साढपोरिसिका)

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढ़ पोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ; उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं, खाइमं साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिव-त्तियागारेणं, वोसिरे।

(बियासणे एकासणेका पच्चक्खाण)

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढ़पोरिसिं, मुट्ठि-सहिअं, पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्न कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागरेणं। (विगइओ पच्चक्खाइ। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागा-रेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं।) (बियासणं) पच्च-क्खाइ। तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं सागारिआगारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरू अब्भुट्ठाणेणं

पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेणवा, अलेवेणवा, अच्छेणवा, बहुलेवेणवा,ससित्थेणवा, असित्थेणवा, वोसिरे ॥

यदि एकासणेका पच्चक्खाण करना हो तो, बियासणंके ठिकाने "एकासणं" कहना।

(आयंबिलका पच्चक्खान)

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं साढ पोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। आयंबिलं पच्चक्खाइ। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, । एगासणं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरू अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेणवा, अलेवेणवा, अच्छेणवा, बहुलेवेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा, वोसिरे ॥

(तिविहार उपवासका पच्चक्खाण)

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं[1] पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं, असणं,

---

१. छट्ठ (बेला) करना हो, तो "सूरे उग्गए छट्ठभत्तं अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ।" अट्ठम (तेला) करना हो तो "सूरे उग्गए अट्ठमभत्तं अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ।"

खाइमं साइमं। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। पाणहार पोरिसिं, साढ़पोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहूवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्सलेवेणवा, अलेवेणवा, अच्छेणवा, बहुलेवेणवा, ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरे ॥

चउविहार उपवासका पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तठं पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणंमहत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे।

रात्रिके-पच्चक्खाण।

यदि बियासणा, एकसणा, आयंबिल, तिविहार उपवास, हो तो पाणहारका पच्चक्खाण करना ॥ और यदि छूटा हो तो दिवस चरिम करना ॥

पाणहारका पच्चक्खाण।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ। अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरेइ ॥

कहना। इसी प्रकार एक एक उपवासकी वृद्धिके साथ दो दो भक्त वधाते जाना जैसे कि, चार करने हो तो दसम भत्तं (५) दुवालस भत्तं, (६) चउदस] (७) [illegible] (८) [illegible]

(दिवस चरिम चउव्विहारका पच्चक्खाण ।)

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं । अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरे ॥

(नोट) खुद पच्चक्खाण करनेवालेको वोसिरेकी जगे वोसिरामि कहना ।

(दिवस चरिम तिविहारका पच्चक्खाण ।)

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ।

(दिवस चरिम दुविहारका पच्चक्खाण ।)

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ । दुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

(१४ नियम धारनेवालेको देसावगासियका पच्चक्खाण ।)

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ । अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ।

॥ सूतक विचार ॥

जन्म सम्बन्धी सूतक विचार ।

१ पुत्रका जन्म हो तो १० दिनका व पुत्रीका जन्म हो तो ११ दिनका और रात्रिको जन्म हो तो १२ दिनका सूतक ।

२ बारह दिनों तक घरके मनुष्योंको देव पूजन नहीं करना चाहिए ।

३ अलग २ (जूदे) भोजन करते हों, वे दूसरेके घरके पानीसे जिनपूजा कर सकते हैं ।

४ प्रसूता स्त्रीको १ मास तक जिन प्रतिमाके दर्शन और ४० दिनों तक जिन पूजा नहीं करनी चाहिए, न मुनिराजोंको आहार देना चाहिए ।

५ व्यवहार भाष्यकी मलयागिरीकृत टीकामें जन्म सूतक १० दिनका कहा है ।

६ गाय, घोड़ी, ऊंटनी, भैंस घरमें प्रसव करें तो २ दिनोंका व जङ्गलमें प्रसव करें तो १ दिनका सूतक ।

७ भैंस, गाय, बकरी और ऊंटनीके प्रसव होनेसे क्रमसे १५, १०, ८ और १० दिनोंके बाद उनका दूध काममें लाना चाहिए ।

८ अपने आश्रित दास दासीका जन्म हो और अपने सामने रहते हों तो २४ प्रहरका सूतक ।

ऋतुवती स्त्री सम्बन्धी सूतक विचार ।

३ दिन तक वर्तन आदि न छूए । ४ दिन तक प्रतिक्रमणादि न करें, तपस्या करना सार्थक है । ५ दिन वाद जिन पूजा करे । रोगादि कारणोंसे ३ दिन वाद भी रुधिर नजर आवे तो दोष नहीं । विवेक सहित पवित्र होकर जिन प्रतिमाके दर्शन अग्रपूजादि करे और साधुओंको वंदना करे, परन्तु जिनप्रतिमाकी अङ्गपूजा नहीं करना ।

मृत्यु संबंधी सूतकका विचार ।

(१) घरका कोई मनुष्य मर जाय तो १२ दिनका सूतक जिन पूजा नहीं करना, दर्शन करे सामायक प्रतिक्रमण करे । उसके घर साधुको आहार नहीं लेना चाहिये । उसके घरकी अग्नि व जल आदि द्रव्यसे जिन पूजा नहीं हो सक्ती ।

(२) मृतकके कंधा लगानेवाला ३ दिन जिन पूजा नहीं करे दर्शन जरूर करे तथा सामायक प्रतिक्रमण कर सके ।

(३) मृतकको अथवा मृतकको छुए हुवेको भी स्पर्श न हों तो स्नान करनेसे शुद्ध हो सक्ते हैं और मृतकको छुए हुवेसे स्पर्श करनेवाले ८ प्रहर तक सूतक पाले अर्थात जिन पूजा न करे परन्तु दर्शन प्रतिक्रमणादी कर सके

(४) जिनके घर जन्म और मृत्युका सूतक हो उसके घर भोजन करनेवालेंको १२ दिन तक जिन पूजन नहीं करना चाहिये ।

(५) बालक जन्मे उसही दिन मरजाय तो एक दिनका सूतक।

(६) आठ वर्षसे कम उम्रका बालक मरे तो ८ दिनका सूतक।

(७) गाय घोडा आदि पशुकी मृत्यु हो तो घरसे बाहर न ले जावे वहां तक सूतक। खास घरमें मर जाय तो १ दिनका सूतक।

(८) दास दासी जो अपने आश्रयसे घरमें रहे हों और उनकी मृत्यु हो जाय तो ३ दिनका सूतक।

(९) जितने मासका गर्भ गिरे उतने दिनका सूतक।

खरतर गच्छ सामायिक विधि[१]।

तीन वखत नवकार गिणके थापनाजीकी थापना करे तब तेरा बोल चिंतवे सो कहते है-

अथ थापनाचार्यजीके तेरह पड़िलेहणा शुद्ध स्वरूप धारूं १ ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि १) परूपणा शुद्धि २, दर्शन शुद्धि ३, सहित पांच आचार पालुं १, पलावुं २, अनुमोदूं ३, मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, एवं तेर बोल श्री धर्मरत्न प्रकरण सूत्रवृतिमें कहे हैं इति-२ पीछे गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खड़ा होके तीन खमासण देवे सो लिखते है

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

---

१. यदि स्थापनाचार्य माला पुस्तक वगैरहसे नये स्थापन किये हों तो इसकी जरूरत है अन्यथा नहीं।

निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इति ३

अथ सुगुरुको सुख शाता पूछना

इच्छकार भगवान् सुहराइ सुहदेवसी सुख तप शरीर निराबाध सुख संयम यात्रा निर्वहो छो जी स्वामी शाता हैजी इति

ऐसा गुरुको कहके नमस्कार करे, तब गुरु कहे देवगुरु प्रसाद; पीछे नीचे बैठ के जीमना हाथ नीचे लगा कर अभूठिओमि कहे, पीछे खमासमण देके इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपति पड़िलेहुं ऐसा कहे तब गुरु कहे पड़िलेह पीछे इच्छं कही दूसरी बार खमासमण देके मुहपती पडिलेहे यदि मुहपतिके पचास बोल आते हो तो बोले पीछे खड़ा होके इच्छामि खमासमणका पाठ कहके इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक संदिस्साउं कहे तब गुरु कहे संदिस्सावेह। पीछे इच्छं कहके फिर खमासमण देके इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन सामायिक ठाउं कहे तब गुरु कहे ठाएह। पीछे इछं कही खमासमण देकर थोडा झुकके तीन नवकार गिणके इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् पसायकरी सामाथिक दण्डक उच्चरावोजी ऐसा कहे गुरु कहे उच्चरावेमि। पीछे करेमि भंते सामाइयं इत्यादि, सामायिक सूत्र तीन बार उच्चरे पीछे खमासमण देके इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ऐसा कहे तब गुरु कहे पडिक्कमेह। पीछे इच्छं कही इछामि पठिक्कमिउं इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे पीछे तस्स उत्तरी कहके चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउसग्ग करे पीछे णमो अरिहंताणं कहके काउसग्ग पारके मुखसे प्रगट लोगस्स

कहै पीछे खमासमण देके । इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् बेसंने संदिस्साहुं ऐसा कहै तब गुरु कहे संदिसा वेह । पीछें इच्छं कहकें फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् बेसणे ठाऊं कहे गुरु कहे ठायेह फिर इछं कहेके खमासमण देके इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सिज्जाय संदिस्सउ कहे गुरु कहे संदिस्सा वेह । पीछे इच्छं कहेके फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिस्सह भगवंन् सज्झाय करूं ऐसा कहे तब गुरु कहे करेह फिर खमासमण देकर खड़े होकर आठ नवकार कहकर सज्झाय करे तथा जो शीत कालादि होवे तो खमासमणा देके इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पांगरणो संदिस्साउ ऐसा कहे तब गुरु कहे वेह संदिस्सा वेह । पीछे इछं कहकर खमासणा देकर इच्छाकारेण संदिस्सह भगवान् पांगरणो पडिघाउ गुरु कहे पडिग्घा एक पीछे इछं कही वस्त्र ग्रहण कर तथा सामायिकवन्त अथवा पोसा सहित श्रावक बांदे तो बंदामी ऐसा कहे और जो कोई दूसरा बांदे तो सिज्झाय करे ऐसें कहे इति प्रभाति सामायिक विधि ।

बारह बजे पीछे संध्याकाल सामायिक विधि ।

उपर लिखे मुजब ही है परन्तु इतना विशेष है की पहेले इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सिज्झाय संदिस्साउं कहे पीछे गुरु कहे सिज्झाय संदिस्सावेह । पीछे इछं कहके फिर इच्छामि खमासण देके इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सिज्झय करूं ऐसा कहे-पीछे गुरु कहें करेह पीछे खड़ा होके मधुर स्वरे आठ नवकार गुणी सिज्झाय करे पीछे इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्

वेंसणे संदिस्साउं कहे पीछे गुरु कहे संदिस्सावेह। पीछे इच्छं कहके फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् वेसणे ठाउं। ऐसा कहे गुरु कहे ठाएह। पीछे पागरणों वीगेरे ऊपर मुजब जानना इति।

अथ सामायिक पारणेकी विधि कहे हैं।

दो घड़ी सामायिक किये बाद—सामायिक पारे तब एक खमासमण देके मुहपति पढि लेवे फिर खमासमण देके इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक पारूं। कहे गुरु कहे पुणोविकायव्वो। पीछे यथाशक्ति कहे फिर खमासमण देके कहे इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक पारे। गुरु कहे आयरो न मोतव्वो पीछे तहत्ति कहके खडा होके नीचे झुककर तीन नवकार गणना पीछे नीचे गोड़वाल बेठके मस्तक नमावी भयवं दसण भद्दो इत्यादि गाथा कहें सो लिखते हैं।

भयवं दसण भद्दो, सुदंसणो थूल भद्द वयरोय,
सफली कयगिह चाया, साहूएहं विहाहुंती ॥१॥
साहूण वंदणेणं, नासइपावं असंकिया भावा,
फासु अदाणे निज्जर, अभिग्गहोनाणमाइणं ॥२॥
छउमत्थो मुढमणो, कित्तिय मित्तपि संभरइ जीवो,
जंचन संभरामि, अहंमिच्छामिदुक्कडं तस्स ॥३॥
जंजंमणेणं चिंतिय, मसुहं वायाइ भासियं किंचि,
असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥४॥
सामायिक पोसह संठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो,

सो सफलो बोधवो, से सो संसार फलहेऊ ॥५॥

सामायिक विधे कीधु विधें कीधुं विधि करतां, अविधि आशातना लागी होय। दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बतीस दूषण माहिजो कोई दूषण लगे होय सो सहू मन कर वचन कर कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिक पोसह पारनेकी गाथा—
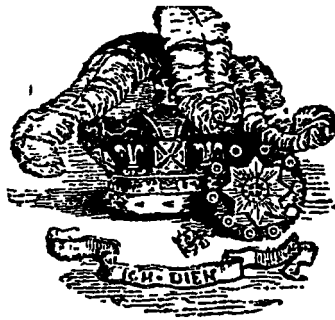
नंबर	तीर्थंकरके नाम	माताके नाम	पिताके नाम	लांछन चीन
१	ऋषभदेव	मरुदेवामाता	नाभिकुलकरजा	वृषभ
२	अजितनाथ	विजयामाता	जितशत्रु राजा	हस्ती
३	संभवनाथ	सेनामाता	जितारि राजा	अश्व
४	अभिनंदन	सिद्धार्थामाता	संवर राजा	बंदर
५	सुमतिनाथ	मंगलामाता	मेघ राजा	क्रौंचपक्षी
६	पद्मप्रभु	सुसीमामाता	श्रीधर राजा	पद्मकमल
७	सुपार्श्वनाथ	प्रथिवीमाता	प्रतिष्ठ राजा	साथीया
८	चंद्रप्रभु	लक्ष्मणामाता	महासेन राजा	चंद्र
९	सुविधिनाथ	रामाराणीमाता	सुग्रीव राजा	मच्छ
१०	शितलनाथ	नंदामाता	दृढरथ राजा	श्रीवत्स
११	श्रेयांशनाथ	विष्णुमाता	विष्णु राजा	खडगी (गेंडा
१२	वासुपूज्य	जयामाता	वसुपूज्य राजा	पाड़ा महिष
१३	विमलनाथ	श्यामामाता	कृतवर्म राजा	सुअर
१४	अनंतनाथ	सुयशामाता	सिंहसेन राजा	सीचाण
१५	धर्मनाथ	सुव्रतामाता	भानु राजा	वज्र
१६	शांतिनाथ	अचिराराणीमाता	विश्वसेन राजा	हरिण
१७	कुंथुनाथ	श्री राणीमाता	सूर राजा	बकरा
१८	अरनाथ	देवीराणी माता	सुदर्शन राजा	नंदावर्त
१९	मल्लीनाथ	प्रभावतीमाता	कुंभ राजा	कलश
२०	मुनिसुव्रत	पद्मावतीमाता	सुमित्र राजा	काचवा
२१	नमिनाथ	विप्रा राणीमाता	विजय राजा	नीलकमल
२२	नेमिनाथ	शिवादेवीमाता	समुद्रविजय राजा	शंख
२३	पार्श्वनाथ	वामादेवी माता	अश्वसेन राजा	सर्प
२४	महावीरस्वामी	त्रिशलादेवीमाता	सिद्धार्थ राजा	सिंह

जन्मभुमीके नाम	शरीरका प्रमाण	आयुप्रमान	निर्वाण भूमि	वर्ण
विनिता	५०० धनुष	८४ लक्ष पूर्व	अष्टापद तीर्थ	सुवर्ण
अयोध्या	४५० धनुष	७२ लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
सावथ्थी	४०० धनुष	६० लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
अयोध्या	३५० धनुष	५० लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
अयोध्या	३०० धनुष	४० लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
कौशंबी	२५० धनुष	३० लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	रक्तवर्ण
बणारसी	२०० धनुष	२० लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
चंद्रपुरी	१५० धनुष	१० लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	श्वेत वर्ण
काकंदी	१०० धनुष	२ लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	श्वेत वर्ण
भद्दिलपुर	९० धनुष	१ लक्ष पूर्व	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
सिंहपुरी	८० धनुष	८४ लक्ष वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
चंपापुरी	७० धनुष	७२ लक्ष वर्ष	चंपापुरी तीर्थ	रक्तवर्ण
कंपिलपुरी	६० धनुष	६० लक्ष वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
अयोध्या	५० धनुष	३० लक्ष वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
रत्नपुरी	४५ धनुष	१० लक्ष वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
हथ्थीनापुर	४० धनुष	१ लक्ष वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
गजपुरी	३५ धनुष	९५ हजार वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
नागपुरी	३० धनुष	८४ हजार वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	सुवर्ण
मथुरा	२५ धनुष	५५ हजार वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	नीलवर्ण
राजगीरी	२० धनुष	३० हजार वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	श्यामवर्ण
मथुरा	१५ धनुष	१० हजार वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	पीतवर्ण
सौरीपुर	१० धनुष	१ हजार वर्ष	गिरनार तीर्थ	श्यामवर्ण
बनारसी	९ हाथ	१ सो वर्ष	समेतशिखर तीर्थ	नीलवर्ण
क्षत्रीकुंड	७ हाथ	७२ वर्ष	पावापुरी तीर्थ	पीतवर्ण